विश्व हिंदी समाचार
Vishwa Hindi Samachar

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष : 11 अंक : 42 जून, 2018

11वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन

18-20 अगस्त 2018 तक भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा मॉरीशस सरकार के सहयोग से मॉरीशस के स्वामी विवेकानंद अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन केंद्र, पाय में 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन का भव्य आयोजन होने जा रहा है। इस वर्ष सम्मेलन का मुख्य विषय ***'हिंदी विश्व और भारतीय संस्कृति'*** है। यह सम्मेलन तीसरी बार मॉरीशस में आयोजित होने जा रहा है। इस महाकुम्भ में हिंदी की ऊर्जा का अद्वितीय प्रदर्शन होगा।

11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के वेबसाइट एवं 'लोगो' का लोकार्पण

10 अप्रैल, 2018 को विदेश मंत्रालय, भारत के जवाहरलाल नेहरू भवन में 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन का मीडिया लॉन्च कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसके अंतर्गत 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के वेबसाइट एवं 'लोगो' का लोकार्पण मुख्य अतिथि, माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज तथा विशेष अतिथि, माननीया श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन द्वारा किया गया। वेबसाइट के लोकार्पण के साथ ही 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में प्रतिभागिता हेतु पंजीकरण की औपचारिक शुरुआत हुई।

पृ. 8

आज़मगढ़ में दो दिवसीय मीडिया समग्र मंथन संगोष्ठी

7-8 अप्रैल, 2018 को जनपद मुख्यालय के नेहरू हॉल, आज़मगढ़ में दो दिवसीय मीडिया समग्र मंथन संगोष्ठी तथा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व डीजीपी श्री प्रकाश सिंह थे। संगोष्ठी के अंतर्गत वक्ताओं ने ***'लोकतंत्र, मीडिया और हमारा समय'*** विषय पर अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

पृ. 4

कनाडा में अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

25-30 अप्रैल, 2018 को विश्व हिंदी संस्थान कल्चरल ऑर्गानाइज़ेशन, कनाडा द्वारा पांच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का मुख्य विषय था 'हिंदी का वैश्विक परिदृश्य : विस्तार और संभावनाएँ'।

पृ. 5

इटली में 8वाँ अंतरराष्ट्रीय हिंदी साहित्य एवं संस्कृति सम्मेलन

4 जून, 2018 को विश्व हिंदी साहित्य परिषद् के तत्वावधान में इटली के मिलान शहर में ***'8वाँ अंतरराष्ट्रीय हिंदी साहित्य एवं संस्कृति सम्मेलन'*** का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय कौंसलावास के कौंसल महामहिम श्री प्रदीप गौतम उपस्थित थे। डॉ. मुक्ता, डॉ. मीनाक्षी जोशी, डॉ. गुरमीत सिंह और डॉ. राजेश श्रीवास्तव विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचासीन थे।

पृ. 4

श्री अभिमन्यु अनत

4 जून, 2018 को मॉरीशस के वरिष्ठ हिंदी सेवी, लेखक व प्रचारक श्री अभिमन्यु अनत का 81 वर्ष की आयु में निधन हो गया। श्री अभिमन्यु अनत मॉरीशस के हिंदी कथा साहित्य के सम्राट माने जाते हैं। शांत एवं सौम्य व्यक्तित्व के धनी श्री अभिमन्यु अनत केवल मॉरीशस ही नहीं, वरन् पूरे हिंदी जगत् के शिरोमणि हैं। विश्व हिंदी सचिवालय व समस्त हिंदी जगत् की ओर से आपको भावभीनी श्रद्धांजलि।

पृ. 13

इस अंक में आगे पढ़ें :

सम्मेलन, संगोष्ठी, कार्यशाला, समारोह	पृ. 4-7
लोकार्पण	पृ. 8-10
सम्मान / पुरस्कार	पृ. 11-12
श्रद्धांजलि	पृ. 12-14
संपादकीय	पृ. 15

ISSN 1694-2485

11वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन

11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के उपलक्ष्य में विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित महत्त्वपूर्ण गतिविधियाँ

18-20 अगस्त 2018 तक भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा मॉरीशस सरकार के सहयोग से मॉरीशस के स्वामी विवेकानन्द अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन केंद्र, पाय में 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन का भव्य आयोजन होने जा रहा है। विश्व हिंदी सम्मेलन का मुख्य विषय ***'हिंदी विश्व और भारतीय संस्कृति'*** है। यह सम्मेलन तीसरी बार मॉरीशस में आयोजित होने जा रहा है और इसके आयोजन में विश्व हिंदी सचिवालय को महत्त्वपूर्ण भूमिका सौंपी गई है। आयोजन की सफलता तथा उसके प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से सचिवालय सम्मेलन से पूर्व की तैयारियों से संबंधित अनेक गतिविधियों का आयोजन करता रहा है, जिनमें से एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि 'परिचर्चा-बैठक' है। जून महीने में चार परिचर्चा-बैठकों का सफल आयोजन किया गया जिनकी रिपोर्ट प्रस्तुत हैं :

प्रथम परिचर्चा-बैठक

3 जून, 2018 को विश्व हिंदी सचिवालय के मुख्यालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स के संगोष्ठी कक्ष में भारत के विदेश मंत्रालय के संयुक्त सचिव (हिंदी, संस्कृत), श्री अशोक कुमार की अध्यक्षता में 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के संदर्भ में एक परिचर्चा-बैठक हुई, जिसमें मॉरीशस के 33 हिंदी सेवियों ने भाग लिया। सम्मेलन से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर निम्नलिखित सुझाव प्राप्त हुए :

1. सम्मेलन-स्थल के विभिन्न कक्षों के नामकरण के संदर्भ में श्री वासुदेव विष्णुदयाल एवं श्री जयनारायण रॉय की हिंदी-सेवा को विस्मृत न किया जाए।
2. पंजीकरण शुल्क की राशि कम करने पर विचार किया जाए।
3. सम्मेलन में मॉरीशस के हिंदी अध्यापकों की भूमिका निर्धारित की जाए।
4. मॉरीशस में गठित अकादमिक समिति द्वारा दैनिक कार्यक्रम का प्रस्तावित मसौदा विदेश मंत्रालय, भारत को प्रेषित किया गया है। अब समिति आलेख आमंत्रित करने जा रही है।
5. मॉरीशस के वरिष्ठतम् हिंदी सेवियों को दीर्घकालीन हिंदी सेवा के लिए सम्मानित किया जाए।
6. पुस्तकों के लोकार्पण एवं कवि-सम्मेलन में प्रतिभागिता की प्रक्रिया स्पष्ट की जाए।
7. समानांतर-सत्रों का प्रावधान किया जाए।
8. डायस्पोरा के लिए ऑनलाइन रेपोज़िटोरी का प्रावधान किया जाए।
9. हिंदी सेवी युवावर्ग का सम्मान किया जाए।
10. सम्मेलन के एक सप्ताह पूर्व हिंदी फ़िल्मोत्सव का आयोजन किया जाए।
11. सम्मेलन को सफल बनाने में हरेक का सार्थक व सामूहिक सहयोग हो ।
12. आयोजन समिति को लिखित रूप से सुझाव भेजे जाएँ।
13. युवकों के साथ हिंदी में रोज़गार की संभावनाओं पर परिचर्चा-बैठक में विभिन्न प्रतिष्ठानों के अध्यक्षों को सम्मिलित किया जाए।
14. 'विश्व हिंदी सम्मान' हिंदी सेवी महिलाओं को भी प्रदान किया जाए।

द्वितीय परिचर्चा-बैठक

18 जून, 2018 को विश्व हिंदी सचिवालय के मुख्यालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स के संगोष्ठी कक्ष में 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के संदर्भ में मॉरीशस के वरिष्ठ लेखक, श्री प्रहलाद रामशरण की अध्यक्षता में द्वितीय परिचर्चा-

बैठक हुई, जिसका विषय था '11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में लेखकों की भूमिका' । मॉरीशस के लगभग 25 वरिष्ठ एवं नवोदित हिंदी लेखकों ने परिचर्चा-बैठक में भाग लिया। श्री रामदेव धुरन्धर, श्री धनराज शम्भु, श्रीमती कल्पना लालजी और श्रीमती तीना जग्गू-मोहेश प्रमुख वक्ता थे। परिचर्चा-बैठक के अंतर्गत निम्नलिखित विचार एवं सुझाव व्यक्त किए गए :

1. सम्मेलन में विश्व के कोने-कोने से हिंदी के विद्वान आएँगे जिन्हें मॉरीशसीय साहित्यकार अपनी कृतियाँ भेंट कर सकते हैं। इससे विश्व हिंदी समुदाय को मॉरीशसीय हिंदी समुदाय के सृजनात्मक कार्यों की जानकारी प्राप्त होगी और विदेशी भाषाओं में मॉरीशसीय हिंदी रचनाओं के अनुवाद की संभावना बढ़ेगी।
2. मॉरीशसीय नवोदित लेखकों द्वारा सम्मेलन में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए देश-विदेश के लेखकों से संपर्क स्थापित करने और प्रेरणा प्राप्त करने के अवसर का पूरा लाभ उठाया जाए।
3. सम्मेलन के अंतर्गत आयोजित होने वाली प्रदर्शनियों में मॉरीशस में आरंभ से ही जितनी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, उनकी पूरी सूची का प्रदर्शन करना महत्त्वपूर्ण है। इस सूची को अद्यतन बनाने हेतु प्रत्येक मॉरीशसीय रचनाकार के सहयोग की आवश्यकता है।
4. मॉरीशसीय हिंदी लेखकों को सम्मेलन के सभी सत्रों में आरंभ से अंत तक भाग लेना और अपनी प्रतिक्रिया को मौखिक और लिखित रूप में प्रस्तुत करना ज़रूरी है।
5. सम्मेलन के उपरांत भी परिचर्चा-बैठक का आयोजन करते हुए सम्मेलन के परिणामों पर विचार-विमर्श किया जाए।
6. मॉरीशसीय हिंदी साहित्य को दुनिया तक पहुँचाने का कार्य अभी शेष है। विश्व के हर क्षेत्र में, विशेषकर विश्वविद्यालयों एवं पुस्तकालयों में मॉरीशसीय हिंदी रचनाओं को पहुँचाने और अन्य देशों की हिंदी कृतियों को मॉरीशस में लाने का प्रावधान किया जाए, ताकि किसी भी हिंदी रचनाकार की पुस्तक उसके घर या उसके देश तक सीमित न रहे।
7. हिंदी साहित्यकारों द्वारा देश-विदेश में अपनी रचनाओं का प्रसार करने के लिए प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाए।
8. नवोदित लेखकों को प्रोत्साहित करने के लिए उनकी रचनाओं का संकलन प्रकाशित किया जाए।
9. नवोदित लेखकों को सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया जाए।

तृतीय परिचर्चा-बैठक

22 जून 2018 को 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के संदर्भ में विश्व हिंदी सचिवालय के मुख्यालय, फ़ेनिक्स के संगोष्ठी कक्ष में सचिवालय की शासी परिषद् के सदस्य, डॉ. उदय नारायण गंगू की अध्यक्षता में तृतीय परिचर्चा-बैठक संपन्न हुई। परिचर्चा का विषय था ***'11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में प्राध्यापकों की भूमिका'***। लगभग 20 प्राध्यापकों ने परिचर्चा-बैठक में भाग लिया। डॉ. संयुक्ता भुवन-रामसारा, डॉ. विद्योत्मा कुंजल तथा डॉ. बीरसेन

जागासिंह प्रमुख वक्ता थे। परिचर्चा-बैठक के अंतर्गत निम्नलिखित विचार एवं सुझाव व्यक्त किए गए :

1. उप-समितियों में लिए जा रहे निर्णयों की सूचना प्राध्यापकों को दी जाए।
2. मॉरीशसीय हिंदी प्राध्यापकों को आलेख प्रस्तुत करने और अकादमिक सत्रों की अध्यक्षता करने का अवसर प्रदान किया जाए।
3. प्राध्यापकों को अनुवादक, प्रतिवेदक और समयपाल के रूप में नियुक्त किया जाए।
4. प्राध्यापक विदेश से आए हुए प्रतिभागियों का सत्कार करें।
5. प्राध्यापक आयोजन के सुचारु संचालन हेतु महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
6. यह निश्चित किया जाए कि मुख्यत: शैक्षिक सत्रों के दौरान भोजन-स्थल बन्द हो।
7. अनुशासन निश्चित करने के लिए प्राध्यापकों की टीम तैयार की जाए।
8. सूचना-संचार हेतु प्राध्यापकों की एक टीम तैयार की जाए।
9. आलेख की प्रतियाँ बाँटने में प्राध्यापकों को संलग्न किया जाए।
10. मंच-संचालन और धन्यवाद-ज्ञापन करने हेतु प्राध्यापकों को नियुक्त किया जाए।
11. दैनिक बुलटिन तैयार करने में प्राध्यापकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका हो।
12. सम्मेलन में हिंदी से जुड़े अन्य विषयों के प्राध्यापकों की प्रतिभागिता भी होनी चाहिए।

चतुर्थ परिचर्चा-बैठक

29 जून 2018 को 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के संदर्भ में विश्व हिंदी सचिवालय के मुख्यालय, फ़ेनिक्स के संगोष्ठी कक्ष में डॉ. देवभरत सिरतन की अध्यक्षता में चतुर्थ परिचर्चा-बैठक संपन्न हुई। परिचर्चा का विषय था *'11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में मीडिया कर्मियों की भूमिका'* । लगभग 14 मीडिया कर्मियों ने परिचर्चा-बैठक में भाग लिया। श्री केसन बधु, डॉ. शशि बाला दुकन, डॉ. अलका धनपत एवं श्रीमती सविता तिवारी प्रमुख वक्ता थे। परिचर्चा-बैठक के अंतर्गत निम्नलिखित विचार एवं सुझाव व्यक्त किए गए :

1. यूट्यूब के माध्यम से सम्मेलन का प्रचार किया जाए।
2. सम्मेलन के कार्यक्रमों से संबंधित वीडियो बनाकर सचिवालय के वेबसाइट या फ़ेसबुक पेज पर डाला जाए।
3. एम.बी.सी. रेडियो एवं टी.वी. के माध्यम से सम्मेलन संबंधी सूचनाएँ एवं जानकारियाँ प्रसारित की जाएँ।
4. सम्मेलन के दैनिक अकादमिक सत्रों के अंतर्गत विभिन्न विषयों पर आधारित आलेखों के प्रस्तुतीकरण की सूचना हर सुबह रेडियो पर दी जाए।
5. सम्मेलन के दैनिक कार्यक्रमों का रेडियो और टी.वी. पर सीधा प्रसारण किया जाए।
6. स्थानीय एवं विदेशी पत्रकारों को अकादमिक सत्रों एवं वक्ताओं की जानकारी उपलब्ध कराने हेतु एक टीम तैयार की जाए।
7. एम.बी.सी. के वेबसाइट पर सम्मेलन की रिपोर्ट हिंदी, फ़्रेंच और अंग्रेज़ी में दी जाए।
8. सम्मेलन में प्रतिभागियों का साक्षात्कार कराने हेतु सहायकों की एक टीम तैयार की जाए।
9. भोजपुरी चैनल पर भी सम्मेलन के कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाए।
10. सोशल मीडिया अर्थात् फ़ेसबुक, व्हाट्सएप्प आदि के माध्यम से सम्मेलन संबंधी जानकारियों का प्रसार किया जाए, ताकि युवा पीढ़ी इस भव्य आयोजन से अधिक गहनतापूर्वक जुड़ सके।
11. रेडियो पर सम्मेलन के लिए पंजीकरण की समाप्ति तिथि की सूचना प्रसारित करने तथा सम्मेलन से संबंधित अन्य घोषणा करने के लिए औपचारिक रूप से एम.बी.सी. को पत्र लिखा जाए।
12. सम्मेलन से पहले एक सप्ताह के दौरान टी.वी. पर प्रतिदिन हिंदी में वीडियो क्लिप्स या हिंदी कहानियों का प्रस्तुतीकरण किया जाए, ताकि पूरे मॉरीशस में हिंदी के वातावरण का निर्माण हो।
13. रेडियो पर सम्मेलन संबंधी कार्यक्रमों में भाग लेने के इच्छुक सचिवालय अथवा रेडियो से संपर्क कर सकते हैं।
14. रेडियो पर सम्मेलन संबंधी जिंगल्स प्रसारित किए जाएँ, ताकि अधिक लोग सम्मेलन से जुड़ सकें।
15. सम्मेलन से 15 दिन पूर्व रेडियो पर प्रतिदिन सुबह के समय स्थानीय व अंतरराष्ट्रीय हिंदी विद्वानों या साहित्यकारों की महत्त्वपूर्ण सूक्तियाँ प्रसारित की जाएँ।
16. रेडियो पर अन्य भारतीय भाषाओं में प्रसारित कार्यक्रमों में भी सम्मेलन की चर्चा की जाए।
17. अहिंदी भाषियों तक सम्मेलन की सूचना मीडिया द्वारा पहुँचाई जाए।
18. विदेश से आने वाले प्रख्यात लेखकों एवं आलेख प्रस्तुतकर्ताओं का परिचय सोशल मीडिया के माध्यम से दिया जाए।
19. साहित्यकार और वक्ता साहित्यिक एवं उत्कृष्ट भाषा का प्रयोग करेंगे। उनके विचारों को सहज भाषा में जनता तक पहुँचाने हेतु सोशल मीडिया की महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी।
20. सोशल मीडिया पर सम्मेलन संबंधी एक विशेष पेज बनाया जाए, जिसपर निरंतर सम्मेलन संबंधी पोस्ट डाले जाएँ।
21. एक हिंदी गान तैयार किया जाए, जो सम्मेलन से दस दिन पूर्व समाचार के बाद प्रस्तुत होने वाले 3 मिनट के प्रोग्राम की समाप्ति पर चलाया जाए।
22. स्थानीय एवं विदेशी मीडिया के आपसी सहयोग से सम्मेलन संबंधी जानकारियों का बेहतर प्रसार किया जाए।
23. दैनिक समाचार-पत्रों में सम्मेलन के दैनिक कार्यक्रमों की लघु रिपोर्ट या विज्ञप्ति छापी जाए।
24. बैठकाओं के विद्यार्थियों द्वारा रेडियो और टी.वी. पर लघु प्रस्तुति की जाए।
25. 'साहित्य दर्पण' कार्यक्रम में भाग लेने वाले इच्छुक एक सप्ताह पहले कार्यक्रम के संचालक से संपर्क करें।
26. 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन का 'लोगो' मीडिया पर अधिक से अधिक दिखाया जाए।
27. रेडियो पर लेखकों की आवाज़ में उनकी रचनाएँ प्रस्तुत की जाएँ।
28. बसों में लगाए गए टी.वी. स्क्रीन पर सम्मेलन संबंधी सूचनाएँ एवं जानकारियाँ दी जाएँ।
29. कला व संस्कृति मंत्रालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय हिंदी नाटक प्रतियोगिता में प्रदर्शित श्रेष्ठ नाटकों को सम्मेलन से एक सप्ताह पूर्व टी.वी. पर दिखाया जाए।
30. बेस्ट/टॉप एफ़.एम. एवं अन्य निजी रेडियो की सहायता से भी सूचना प्रसारित की जाए।
31. सम्मेलन के संदर्भ में टी.वी. पर प्रसारित कार्यक्रमों का भाषांतरण दिया जाए, ताकि अहिंदी भाषी भी समझ पाएँ।
32. छात्रों के लिए कलम, कॉपी अथवा चाबी छल्ला बनाए जाएँ, जिनमें सम्मेलन का 'लोगो' हो।
33. व्हाट्सएप्प और यूट्यूब पर सम्मेलन संबंधी सूचना-संचार हेतु एक टीम तैयार की जाए।
34. सचिवालय के वेबसाइट पर सम्मेलन के लाइव स्ट्रीमिंग की व्यवस्था की जाए।

सम्मेलन / संगोष्ठी / कार्यशाला / समारोह

इटली में 8वाँ अंतरराष्ट्रीय हिंदी साहित्य एवं संस्कृति सम्मेलन

4 जून, 2018 को विश्व हिंदी साहित्य परिषद् के तत्वावधान में इटली के मिलान शहर में *'8वाँ अंतरराष्ट्रीय हिंदी साहित्य एवं संस्कृति सम्मेलन'* का आयोजन किया गया। सम्मेलन को चार सत्रों में बाँटा गया। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय कौंसलावास के कौंसल, महामहिम श्री प्रदीप गौतम उपस्थित थे। डॉ. मुक्ता, डॉ. मीनाक्षी जोशी, डॉ. गुरमीत सिंह और डॉ. राजेश श्रीवास्तव विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचासीन थे। सत्र की अध्यक्षता डॉ. हरीश नवल ने की। इस अवसर पर लगभग 15 पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। सत्र का संचालन डॉ. आशीष कंधवे ने किया। सम्मेलन के अवसर पर आयोजित कला प्रदर्शनी में श्री हर्षवर्धन, श्री रूपचन्द, डॉ. स्नेह सुधा नवल, श्री सतीश जोशी, श्रीमती ज्योत्स्ना सक्सेना, श्री सुनील ममगाई, सुश्री हिमांशी आर्या और सुश्री अन्विता नवल के चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई। श्री प्रदीप गौतम ने इस अंतरराष्ट्रीय चित्रकला प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

दूसरे सत्र में *'हिंदी की वैश्विकता का वर्तमान'* विषय पर चर्चा की गई। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. नयना डेलीवाला तथा डॉ. स्नेहसुधा उपस्थित थीं। सत्र की अध्यक्षता डॉ. आनंद सिंह ने की। इस अवसर पर डॉ. विनोद कुमार मंगलम, डॉ. मीना शर्मा, डॉ. सीमा रानी, डॉ. कंचन शर्मा, डॉ. स्नेह लोहिया, डॉ. संज्ञा उपाध्याय और डॉ. चरण सिंह तोमर ने अपने विचार रखे। सत्र का संचालन डॉ. संगीता राय ने किया।

तृतीय सत्र में इटली और भारत के कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति की गई।

चौथे सत्र में भारत और इटली के लगभग 20 कवियों ने अपनी-अपनी कविताओं का पाठ किया। श्री प्रेम भारद्वाज 'ज्ञानभिक्षु' मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। सत्र की अध्यक्षता डॉ. नवल ने की। सत्र का संचालन श्री सुशील साहिल ने किया। इस अवसर पर *'हिंदी धरा'* के नाम से एक विशेष स्मारिका का भी प्रकाशन किया गया तथा सभी प्रतिभागियों को एक स्मृति चिह्न भी प्रदान किया गया। इस सम्मेलन में भारत तथा अन्य देशों से कई लेखकों एवं हिंदी प्रेमियों ने भाग लिया।

डॉ. आशीष कंधवे के फ़ेसबुक पृष्ठ से साभार

लंदन में अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

13 जून, 2018 को भारतीय उच्चायोग, लंदन के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय हिंदी परिषद् और आधारशिला विश्व हिंदी मिशन द्वारा अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। उपस्थित हिंदी साहित्यकारों एवं हिंदी सेवियों में डॉ. कृष्ण कुमार, श्री तेजेंद्र शर्मा, ज़ाकिया जुबेरी, श्रीमती उषा राजे सक्सेना, दिव्या माथुर, श्री अरुण सबरवाल, अरुणा अजितसरिया, कादंबरी मेहरा, श्री के. बी. एल. सक्सेना, श्रीराम शर्मा मीत, काउंसलर ग्रेवाल आदि शामिल थे। इस कार्यक्रम में हिंदी सम्मेलनों का लघु रूप देखने को मिला। पुस्तकों की प्रदर्शनी, चित्रकला प्रदर्शनी, काव्य-पाठ, ग़ज़ल एवं गीत और विभिन्न विद्वानों द्वारा वक्तव्य और विचार-विमर्श का आयोजन किया गया। श्री भगत सिंह कोश्यारी ने प्रवासी साहित्यकारों और हिंदी सेवियों को वास्तविक राजदूत बताते हुए उनके प्रयासों की सराहना की और कहा कि वे हिंदी और भारतीय संस्कृति के माध्यम से विदेशों में भारत की गरिमा बढ़ा रहे हैं, वहीं अंतरराष्ट्रीय हिंदी सिनेमा के विशेषज्ञ श्री अजित राय ने हिंदी के वैश्विक-प्रचार में हिंदी सिनेमा के योगदान को रेखांकित किया। 'आधारशिला' के संपादक, डॉ. दिवाकर भट्ट ने स्थानीय साहित्यकारों और भारत से आए हिंदी सेवियों को सम्मानित किया। इस अवसर पर कई पुस्तकों का विमोचन भी हुआ। साथ-साथ हिंदी के कई विषयों यथा 'हिंदी देश से दुनिया तक', 'हिंदी और विज्ञान' आदि पर अलग-अलग विद्वानों ने अपने विचार रखे। भारत से आए साहित्यकारों, पत्रकारों, शिक्षकों आदि के 40 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल, स्थानीय हिंदी विद्वानों, हिंदी प्रेमियों और ब्रिटेन से कुल 27 हिंदी प्रेमियों एवं हिंदी साहित्यकारों ने भाग लिया।

डॉ. नूतन पाण्डेय के फ़ेसबुक पृष्ठ से साभार

मॉरीशस में भारत सप्ताह के अंतर्गत हास्य कवि-सम्मेलन

14 अप्रैल, 2018 को मॉरीशस में भारत सप्ताह के अंतर्गत भारतीय उच्चायोग तथा हिंदी प्रचारिणी सभा के संयुक्त तत्वावधान में एक हास्य कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। कवि-सम्मेलन इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फ़ेनिक्स में हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारत से पधारे श्री सुरेंद्र शर्मा थे तथा मॉरीशस में भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अभय ठाकुर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपसथित थे। इस अवसर पर श्री सुरेंद्र शर्मा तथा मॉरीशस के तीन कवियों - श्री धनराज शम्भु, श्री राज हिरामन तथा डॉ. हेमराज सुन्दर ने हास्य कविता-पाठ किया। कार्यक्रम के बाद महामहिम श्री अभय ठाकुर तथा हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान,

श्री यंतुदेव बुधु द्वारा कवियों को सम्मानित किया गया। कवि-सम्मेलन का संचालन भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव, डॉ. नूतन पाण्डेय ने किया। सम्मेलन में कई गण्यमान्य अतिथि तथा हिंदी प्रेमी उपस्थित थे।

हिंदी प्रचारिणी सभा की रिपोर्ट

'आज का समय और डॉ. अम्बेडकर' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी

14 अप्रैल, 2018 को ग़ालिब सभागार, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में भारतरत्न डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जयंती के उपलक्ष्य में 'आज का समय और अम्बेडकर' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति, प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने किया और कहा कि डॉ. अम्बेडकर ने 'बहिष्कृत भारत' और 'मूक नायक' जैसी पत्रिकाओं के माध्यम से सामाजिक एकता और समानता का प्रसार किया। स्वागत वक्तव्य संगोष्ठी संयोजक तथा हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. के. के. सिंह ने दिया। मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित प्रो. मनोज कुमार ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आज का समय अति संभावनाओं से भरा हुआ है। ऐसे समय में डॉ. अम्बेडकर के विचारों को आगे ले जाना ही सही रास्ता हो सकता है। उन्होंने डॉ. अम्बेडकर और गांधी जी की विचारधाराओं का उल्लेख करते हुए कहा कि अस्पृश्यता निर्मूलन को लेकर दोनों विभूतियों ने ही काम किया है। कार्यक्रम का संचालन सहायक प्रोफ़ेसर संदीप सपकाले ने किया तथा आभार-ज्ञापन साहित्य विभाग के सहायक प्रोफ़ेसर, डॉ. रामानुज अस्थाना ने किया।

साभार : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

आज़मगढ़ में दो दिवसीय मीडिया समग्र मंथन संगोष्ठी

7-8 अप्रैल, 2018 को जनपद मुख्यालय के नेहरू हॉल, आज़मगढ़ में दो दिवसीय मीडिया समग्र मंथन संगोष्ठी तथा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व डीजीपी श्री प्रकाश सिंह थे। संगोष्ठी के अंतर्गत वक्ताओं ने ***'लोकतंत्र, मीडिया और हमारा समय'*** विषय पर अपने-अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर ***'शार्प रिपोर्टर'*** मासिक पत्रिका के उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड विशेषांक का विमोचन किया गया।

संगोष्ठी के अंतर्गत प्रो. देवराज ने ***'लोकतंत्र, मीडिया और हमारा समय'*** विषय पर बात की। डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण' ने अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया। पत्रकार रामकिंकर, प्रशांत राजावत, अखिलेश अखिल, पत्रकार जयशंकर गुप्त, अतुल मोहन सिंह, अनामी शरण बबल और यशवंत सिंह ने ***'मीडिया से उम्मीदें'*** विचार सत्र में अपने विचार व्यक्त किए।

दूसरे दिन प्रो. ऋषभदेव शर्मा ने ***'लोकतंत्र, साहित्य व हमारा समय'*** विषयक संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में कहा कि भारत में लोकतंत्र अभी प्रयोग की दिशा में है तथा उसे असफल घोषित करना जल्दबाज़ी माना जाएगा। इस सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. ओमप्रकाश सिंह रहे। अध्यक्षता वरिष्ठ व्यंग्यकार गिरीश पंकज ने की।

इस संगोष्ठी के अंतर्गत ***'शार्प रिपोर्टर'*** द्वारा साहित्य, ग़ज़ल व पत्रकारिता के क्षेत्र में दस लोगों को सम्मानित किया गया। डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा को 'राहुल सांकृत्यायन साहित्य सम्मान', श्री गिरीश पंकज को 'मुखराम सिंह स्मृति पत्रकारिता सम्मान', श्री जयशंकर गुप्त को 'गुन्जेश्वरी प्रसाद स्मृति पत्रकारिता सम्मान', प्रो. देवराज को 'भगवत शरण उपाध्याय स्मृति साहित्य सम्मान', प्रो. ऋषभदेव शर्मा को 'विवेकी राय साहित्य सम्मान', श्री पुण्य प्रसून वाजपेयी को 'सुरेन्द्र प्रताप सिंह टी.वी. पत्रकारिता सम्मान', श्री यशवंत सिंह को 'विजय शंकर वाजपेयी स्मृति पत्रकारिता सम्मान', श्री विजय नारायण को 'शार्प रिपोर्टर लाइफ़ टाइम एचीवमेंट आवर्ड', श्री सतीश रघुवंशी को 'शार्प रिपोर्टर युवा पत्रकार सम्मान', डॉ. मधुर नज़्मी को 'अल्लामा शिब्ली नोमानी स्मृति अदबी आवर्ड' से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त उपस्थित कवियों द्वारा काव्य-पाठ हुआ। कार्यक्रम का संचालन श्री अमन त्यागी ने किया।

साभार : 'हैदराबाद से' ब्लॉग

हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस द्वारा संगोष्ठी

28 जनवरी, 2018 को हिंदी प्रचारिणी सभा तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस द्वारा बैठकाओं के शिक्षकों तथा छात्रों के निमित एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। शिक्षा मंत्री का प्रतिनिधित्व कर रहीं श्रीमती बिहारी पांडे, निदेशिका ज़ोन 4 उद्घाटन समारोह की मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव, डॉ. नूतन पांडेय तथा महात्मा गांधी संस्थान की महानिदेशिका, श्रीमती सूर्यकांति गयान विशिष्ट अतिथि थीं। सभा के प्रधान ने अपने स्वागत् भाषण के बाद हिंदी भाषा के उत्थान, प्रचार और पठन-पाठन पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. नूतन पांडेय ने सभा के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी भाषा की मानकता पर विशेष बल दिया। श्रीमती बिहारी पांडे ने हिंदी के इतिहास तथा सभा द्वारा किए जा रहे कार्यों का उल्लेख किया। इस अवसर पर 'पंकज' पत्रिका के नए अंक का लोकार्पण किया गया।

संगोष्ठी के अंतर्गत श्री निरंजन बिगन ने ***'बैठका-सरकारी शिक्षण व्यवस्था का पूरक'*** विषय पर, डॉ. संध्या अंचराज़ नवोसा ने ***'नई पीढ़ी के हिंदी छात्र की आकांक्षाएँ और अपेक्षाएँ'*** विषय पर तथा डॉ. विनय गुदारी ने ***'सूचना प्रौद्योगिकी तथा हिंदी शिक्षण का भविष्य'*** विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र के बाद गोलमेज़ सत्र का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री गुलशन सुखलाल ने की। इस सत्र में छात्रों, शिक्षकों, निरीक्षकों तथा बैठका-प्रबंधकों ने अपनी-अपनी प्रतिक्रियाएँ दीं।

हिंदी प्रचारिणी सभा की रिपोर्ट

कनाडा में अंतरराष्ट्रीय हिंदी साहित्यिक सम्मेलन

26-30 अप्रैल, 2018 को ओंटारियो राज्य के ब्रैम्प्टन शहर में विश्व हिंदी संस्थान, कनाडा व ग्लोबल हिंदी साहित्य शोध संस्थान, कुरुक्षेत्र, भारत के संयुक्त तत्वावधान में पाँच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी साहित्यिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का मुख्य विषय था ***'हिंदी का वैश्विक परिदृश्य : विस्तार और संभावनाएँ'*** । इसके अंतर्गत हिंदी के वैश्विक परिदृश्य को लेकर विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत 25 अप्रैल को उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि कनाडा स्थित भारतीय कौंसलावास के प्रधान कौंसल, महामहिम श्री दिनेश भाटिया थे और विशेष अतिथि एवं अध्यक्ष के रूप में पद्मश्री प्रो. यार्लागड्डा लक्ष्मीप्रसाद उपस्थित थे। इस कार्यक्रम की सह अध्यक्षता साहित्यकार डॉ. कैलाश भटनागर व विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने की।

उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि महामहिम श्री दिनेश भाटिया ने अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि उन्हें यह देखकर अतीव प्रसन्नता हो रही है कि पहली बार हिंदी के किसी कार्यक्रम में इतनी विशाल संख्या में हिंदी प्रेमी उपस्थित हुए हैं।

सम्मेलन के आयोजक डॉ. सरन घई ने बताया कि इस सम्मेलन में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागी हिंदी भाषा के विद्वान हैं, जो हिंदी प्रेम को अपने उर में संजोये निजी खर्चे पर बिना किसी सरकारी सहायता के भाग लेने पहुँचे और जिन्होंने कनाडा में आकर सम्मेलन के उद्देश्य, हिंदी को विश्वभाषा बनाने के प्रयासों को बुलंदियों तक पहुँचाने में अपना योगदान दिया। उन्होंने आगे कहा कि इस अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का ध्येय वाक्य है – ***"हिंदी का सूर्य कभी अस्त नहीं होता है",*** जो कि हिंदी के बारे में सबसे बड़ी सच्चाई है।

विश्व हिंदी संस्थान की उपाध्यक्ष डॉ. साधना जोशी ने बताया कि संस्था ने वैश्विक स्तर पर अनेक प्रकाशन किए हैं, जिनमें डॉ. सरन घई द्वारा रचित विश्व की सबसे लंबी कविता – 'मुक्तिपथ-प्रेमपथ महाकाव्यगीत', 66 सह-लेखकों की रचना उपन्यास 'खट्टे-मीठे रिश्ते' व 34 कहानीकारों द्वारा रचित अनूठा कहानी-संग्रह 'सुनो, तुम मुझसे झूठ तो नहीं बोल रहे!' मुख्य हैं।

इस अवसर पर संस्था की महासचिव आभा गुप्ता ने बताया कि संस्था की प्रेरणा से विश्व का पहला साहित्यरथ राजस्थान, भारत स्थित डूंगरपुर में और दूसरी बार भारत से बाहर भारत के स्वतंत्रता दिवस पर कनाडा के टोरंटो शहर में निकाला गया और अब टोरंटो में अगस्त 2019 में अगले साहित्य रथ की तैयारी चल रही है।

कार्यक्रम के अंतर्गत विधिवत पत्र प्रस्तुत किए गए तथा कवि-सम्मेलन, परिचर्चा सत्र, कहानी पाठ, सम्मान समारोह आदि का आयोजन हुआ। इस हिंदी सम्मेलन में भारत, अमेरिका, मॉरीशस व फ्रांस के 29 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कनाडा से लगभग 150 प्रतिनिधि इस सम्मेलन में सम्मिलित हुए। सम्मेलन में विद्वान, अध्यापक, लेखक, भाषाविद्, शोधार्थी, संपादक, पत्रकार, संगीतकार, गायक, नृत्यकार, चित्रकार, बुद्धिजीवी एवं हिंदी सेवी संस्थाओं के सदस्य, हिंदी-प्रचारक, हिंदी ब्लॉगर्स, टेक्नोक्रेट आदि ने भाग लिया। दो दिन के मुख्य सम्मेलन को ज़ी टी.वी., पी टी.वी., ओमनी टीवी व हमदर्द टीवी आदि ने प्रसारित किया।

सम्मेलन के दौरान सभी प्रतिभागियों व संयोजक दल ने सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित किया कि विश्व हिंदी संस्थान को ऐसे कार्यक्रम करते रहना चाहिए व हिंदी के मान-सम्मान को इसी उत्साह से संवर्धित करते रहना चाहिए।

प्रो. सरन घई की रिपोर्ट

रूस में 'राम संस्कृति की विश्व यात्रा : साहित्य, विज्ञान और प्रौद्योगिकी' विषयक संगोष्ठी

10-17 मई, 2018 को कज़ान, रूस में साहित्यिक-सांस्कृतिक शोध संस्था, मुंबई द्वारा रूसी-भारतीय मैत्री संघ - 'दिशा', मास्को, अयोध्या शोध संस्थान, भारत, कज़ान फ़ेडेरल यूनिवर्सिटी, कज़ान और मास्को स्टेट यूनिवर्सिटी, मास्को के संयुक्त तत्वावधान में 'राम संस्कृति की विश्व यात्रा साहित्य, विज्ञान और प्रौद्योगिकी' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत भारतीय और रूसी विशेषज्ञों ने 'राम संस्कृति की विश्व यात्रा : साहित्य, विज्ञान और प्रौद्योगिकी' विषय पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर काव्य संध्या संपन्न हुई, जिसमें भारत और रूस के प्रतिभागी कवियों ने रूसी और हिंदी के साथ संस्कृत, कोंकणी, पंजाबी तथा मराठी में काव्य-पाठ किया। कुलपति प्रो. लतीपोव ने भारतीय दर्शन और रूसी संस्कृति के आपसी संबंध पर प्रकाश डाला। साहित्यिक सांस्कृतिक शोध संस्था के संस्थापक डॉ. प्रदीप कुमार सिंह ने वर्तमान विश्व के लिए राम-संस्कृति की प्रासंगिकता को रेखांकित किया तथा रामलीलाओं तथा ललित कलाओं के माध्यम से विश्व भर में भारतीय जीवन दृष्टि के प्रसार की व्याख्या की। भारतीय दूतावास से संबद्ध डॉ. जयसुंदरम् ने भारत और रूस के आपसी संबंधों की दृढ़ता के लिए रामकथा की आवश्यकता का उल्लेख किया। प्रो. ऋषभदेव शर्मा ने अपने वक्तव्य में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से राम-संस्कृति के वैश्विक प्रसार की संभावनाओं पर प्रकाश डालते हुए अमेरिका में बनी एनीमेशन फ़िल्म 'सीता सिंग्स द ब्ल्यूज़' की चर्चा की। इस अवसर पर डॉ. प्रदीप कुमार सिंह के प्रधान संपादकत्व में प्रकाशित ग्रंथ 'राम-संस्कृति की विश्व यात्रा : साहित्य, विज्ञान और प्रौद्योगिकी' तथा 'रामलीला की विश्व यात्रा' का लोकार्पण किया गया। मास्को विश्वविद्यालय के भारत-अध्ययन विभाग में संपन्न द्वितीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी/परिसंवाद में विशेष रूप से रूसी भारतविद प्रो. बरीस अलेक्सेइविच ज़ख़रिन, प्रो. लुद्मिला ख़ख़लोवा, प्रो. गुज़ेल म्रात्खूज़ीना और प्रो. आन्ना बाचकोश्का ने इतिहास, साहित्य, अनुवाद और ललित कलाओं के माध्यम से रूस में राम-संस्कृति के प्रति अध्येताओं की अभिरुचि पर सप्रमाण विचार-विमर्श किया। इस अवसर पर लगभग 50 भारतीय और विदेशी विद्वानों का सारस्वत सम्मान भी किया गया।

साथ ही सेंट पीटर्सबर्ग में पाँच रूसी विद्वानों के सान्निध्य में बहुभाषी काव्य संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें रूसी रचनाकारों और अनुवादकों ने भाग लिया। राम संस्कृति को समर्पित इस काव्य संध्या की अध्यक्षता डॉ. वंदना प्रदीप ने की तथा संचालन डॉ. सत्यनारायण ने किया। एकेडमी ऑफ़ साइंस की भाषाविद् प्रोफ़ेसर एलेना सोबोलेवा मुख्य अतिथि रहीं,

जिन्होंने राम संस्कृति की प्रासंगिकता को रेखांकित किया। प्रो. ऋषभदेव शर्मा, प्रो. दिमित्री बोबकोव और स्थानीय प्रतिनिधियों ने संयुक्त रूप से विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन किया तथा डॉ. सत्यनारायण ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

डॉ. प्रदीप कुमार सिंह की रिपोर्ट

'21वीं सदी में विद्यालयी शिक्षा' विषयक 3 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

6 अप्रैल, 2018 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में ***'21वीं सदी में विद्यालयी शिक्षा'*** विषयक 3 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता कुलपति, प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्रिया के पक्ष पर अधिक बल देते हुए हमें नई विद्यालयी शिक्षा के परिमाण स्थापित करने होंगे। प्रो. आनन्द प्रकाश ने बीज वक्तव्य देते हुए कहा कि शिक्षा में आदर्शवाद के साथ व्यावहारिकता का होना ज़रूरी है। अनेक उदाहरणों के माध्यम से उन्होंने शिक्षा पर विस्तार से चर्चा की। समारोह का संचालन डॉ. अप्रमेय मिश्र ने किया तथा आभार-ज्ञापन प्रो. अवधेश शुक्ल ने किया। इस अवसर पर अध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

साभार : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

हिंदी शिक्षा संघ, दक्षिण अफ़्रीका की 70वीं वर्षगाँठ

25 अप्रैल, 2018 को हिंदी शिक्षा संघ, दक्षिण अफ़्रीका ने अपनी सत्तरवीं वर्षगाँठ मनाई। 1947 में दक्षिण अफ़्रीका आने पर पंडित वेदालंकार को लगा कि यहाँ हिंदी के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता है। भाषा-प्रचार के कार्य में पूर्ण रूप से समर्पित संस्था की आवश्यकता को समझते हुए 25 अप्रैल 1948 को पंडित जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा एवं सनातन धर्म सभा के सहयोग से हिंदी भाषियों की बैठक बुलाई जहाँ उनकी मातृभाषा की स्थिति, समस्याओं और संभावित समाधानों पर विचार-विमर्श किया गया। इसी बैठक के दौरान **'हिंदी शिक्षा संघ'** (दक्षिण अफ़्रीका) का शुभारंभ हुआ था और पं. वेदालंकार इस संघ के प्रथम प्रधान बने तथा 27 वर्षों तक वे संघ में सेवारत रहते हुए दक्षिण अफ़्रीका में हिंदी के इतिहास का स्वर्णिम अध्याय रचने वाले अध्येता बने। हिंदी शिक्षा संघ की स्थापना के पीछे ध्येय था हिंदी शिक्षा को व्यवस्थित रूप प्रदान करना तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़ी संस्थाओं का मार्गदर्शन करना। साथ ही संघ का लक्ष्य व उद्देश्य है - सभी पहलुओं में, विशेषकर लिखित व मौखिक रूप में हिंदी शिक्षण का प्रचार-प्रसार करना, एक जागरुकता पैदा करना, भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं का प्रचार-प्रसार भारतीय संगीत, नृत्य, नाटक और कला को बढ़ावा देना और हिंदी साहित्य व हिंदी धार्मिक ग्रंथों के अकादमिक अध्ययन को बढ़ावा देना।

साभार : हिंदी शिक्षा संघ, दक्षिण अफ़्रीका

नेपाल में छठा सोशल मीडिया मैत्री सम्मेलन

नेपाल में आयोजित सम्मेलन में अतिथि उद्‌बोधन देते राजकुमार जैन राजन

30-31 मार्च, 2018 को भारतीय राजदूतावास, नेपाल-भारत मैत्री संघ, वीरांगना फ़ाउंडेशन, काठमांडू तथा 'हम सब साथ साथ' एवं भारत की विभिन्न साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में 30 और 31 मार्च 2018 को जनकपुर धाम में ***'दो दिवसीय हम सब साथ साथ सोशल मीडिया मैत्री सम्मेलन एवं सम्मान समारोह'*** का भव्य आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह का शुभारंभ मुख्य और विशिष्ट अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। इस अवसर पर नेपाल प्रदेश के कानून एवं आंतरिक मंत्री, माननीय श्री ज्ञानेंद्र यादव, भारतीय राजदूतावास काठमांडू के डी.सी.एम., डॉ. अजय कुमार, भारतीय वाणिज्य दूतावास के काउंसलर, श्री वी. सी. प्रधान, नेपाल के पूर्व सांसद, श्री महेंद्र मिश्र, स्थानीय पत्रकार, श्री सीताराम अग्रहरि, श्री मिश्रीलाल मधुकर, श्री राम भरोसे कापड़ी, श्री राजकुमार सिंधी, श्रीमती आशा सिन्हा आदि उपस्थित थे। श्री गोवर्धन चौमाल एवं सुश्री अंजलि पटेल ने मंच संचालन किया।

इसके पश्चात कला प्रदर्शनी का उद्घाटन और अतिथियों का संभाषण हुआ। इस अवसर पर 'हम सब साथ साथ' पत्रिका के सोशल मीडिया पर केन्द्रित अंक, सर्वश्री संदीप तोमर की आत्मकथा 'एक अपाहिज की डायरी' और श्रीमती शशि श्रीवास्तव के बाल कहानी-संग्रह 'नन्हे कदम, ऊँची उड़ान' का लोकार्पण भी किया गया। सम्मेलन के अंतर्गत 'मैत्री-भाईचारे के प्रचार-प्रसार में सोशल मीडिया की सकारात्मक एवं नकारात्मक भूमिका' पर परिचर्चा, कवि-सम्मेलन, 'बेटी के महत्त्व' को रेखांकित करती एक खुली चर्चा का आयोजन हुआ। साथ ही सभी प्रतिभागियों को उनके साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बाल, युवा, वरिष्ठ और अति वरिष्ठ श्रेणी में सम्मानित किया गया। राजकुमार जैन राजन फ़ाउंडेशन, आकोला द्वारा श्रीमती प्रभा सिंह, अरविंद कुमार साहू एवं किशोर श्रीवास्तव को साहित्यिक और सामाजिक क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु सम्मानित किया गया।

साभार : 'हम सब साथ साथ' डेस्क

लोकार्पण

11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के वेबसाइट एवं 'लोगो' का लोकार्पण

10 अप्रैल, 2018 को भारत के विदेश मंत्रालय के जवाहरलाल नेहरू भवन में 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन का मीडिया लॉन्च कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि भारत की विदेश मंत्री, माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज व विशेष अतिथि मॉरीशस गणराज्य की शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री, माननीया श्रीमती लीला देवी दुकन- लछुमन उपस्थित थीं। कार्यक्रम के दौरान 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के वेबसाइट एवं 'लोगो' का लोकार्पण माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज तथा माननीया श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन द्वारा किया गया। वेबसाइट के लोकार्पण के साथ ही 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में प्रतिभागिता हेतु पंजीकरण की औपचारिक शुरुआत हुई। इस अवसर पर भारत के विदेश राज्य मंत्री, माननीय डॉ. वी. के. सिंह, गृह राज्य मंत्री, माननीय श्री किरेन रिजिजु, मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री, माननीय डॉ. सत्यपाल सिंह, सांसद गण, हिंदी जगत के प्रतिष्ठित विद्वान व अन्य विशिष्ट अतिथियों ने भाग लिया।

विदेश मंत्रालय के वेबसाइट से साभार

नई दिल्ली में 'प्रवासी भारतीयों में हिंदी की कहानी' का लोकार्पण

11 अप्रैल, 2018 को नई दिल्ली में अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् के तत्वावधान में यूनिवर्सिटी ऑफ़ पेन्सिलवानिया के पूर्व आचार्य तथा विख्यात भाषाविद् प्रो. सुरेन्द्र गंभीर द्वारा संपादित 'प्रवासी भारतीयों में हिंदी की कहानी' का लोकार्पण किया गया। अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् के अध्यक्ष श्री वीरेंद्र गुप्त ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि विश्व भर में हिंदी का प्रचार-प्रसार एक नया रचनात्मक स्वरूप ग्रहण कर रहा है। समारोह के मुख्य अतिथि महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि 'हिंदी को विश्व भाषा का दर्जा दिलाने में प्रवासी भारतीयों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के पूर्व उपाध्यक्ष एवं प्रसिद्ध नाटककार श्री दया प्रकाश सिन्हा ने कहा कि हिंदी के माध्यम से संसार में एक ऐसी विश्व संस्कृति विकसित हो रही है, जिसके केन्द्र में भारत है। समारोह की अध्यक्षता करते हुए केन्द्रीय हिंदी संस्थान के उपाध्यक्ष, प्रो. कमल किशोर गोयनका ने 'प्रवासी भारतीयों में हिंदी की कहानी' के संपादकों को बधाई देते हुए कहा कि इस संकलन के प्रकाशन से गिरमिटिया देशों तथा इंग्लैंड, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया जैसे विकसित देशों में हिंदी के प्रयोग और प्रचलन का तथ्यात्मक विवरण उपलब्ध हुआ है। मॉरीशस की भाषाविद् एवं भोजपुरी संगठन की अध्यक्षा, डॉ. सरिता बुधु ने कहा कि हिंदी को विश्व भाषा बनाने में मॉरीशस निरन्तर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। पुस्तक की सहसंपादिका प्रो. वशिनी शर्मा ने कहा कि इस पुस्तक में विदेशों में हिंदी की स्थिति का अत्यंत तथ्यात्मक मूल्यांकन किया गया है। प्रो. सुरेन्द्र गंभीर ने कहा कि इस पुस्तक में तेरह देशों में हिंदी की विकास यात्रा और वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन किया गया है तथा जिस विषय का विवरण न्यूनाधिक मात्रा में प्राय: सभी लेखों में किया गया है वह है - 'युवा पीढ़ी में हिंदी की वर्तमान स्थिति'। विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने हिंदी के वैश्विक स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए बताया कि विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस द्वारा संसार भर में हिंदी के प्रचार-प्रसार का कार्य किया जा रहा है। कार्यक्रम का संचालन श्री नारायण प्रसाद कुमार ने किया।

साभार : श्री नारायण प्रसाद कुमार

लंदन में 'इक सफ़र साथ-साथ' का लोकार्पण

14 मई, 2018 को हाउस ऑव लॉर्ड्स, लंदन में प्रसिद्ध लेखिका और वातायन की संस्थापक दिव्या माथुर द्वारा संपादित पुस्तक 'इक सफ़र साथ-साथ' का लोकार्पण बैरोनेस श्रीला फ़्लैदर, एम. पी. श्री वीरेंद्र शर्मा, प्रो. फ़्रंचेस्का ऑरसिनी और भारतीय उच्चायोग, लंदन के हिंदी और संस्कृत अधिकारी श्री तरुण कुमार के हाथों संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. फ़्रंचेस्का ऑरसिनी ने की। डॉ. अचला वर्मा, अरुणा अजिसरिया और तितिक्षा शाह द्वारा पुस्तक की समीक्षा की गई। इस संग्रह में ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, यूरोप, स्कैंडिनेविया, चीन और संयुक्त अरब अमीरात की भारतीय लेखिकाओं की कहानियाँ शामिल हैं। समारोह का संचालन डॉ. पदमेश गुप्त ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन शिखा वार्ष्णेय ने किया।

साभार : वातायन

ब्रैम्पटन में 'वादों की परछाइयाँ' उपन्यास का लोकार्पण

18 मई, 2018 को चिंकूज़ी पार्क लायब्रेरी, ब्रैम्पटन में श्रीमती पूनम चंद्रा 'मनु' के पहले उपन्यास 'वादों की परछाइयाँ' का लोकार्पण किया गया। हिंदी राइटर्स गिल्ड की सह-संस्थापक निदेशिका डॉ. शैलजा सक्सेना ने अतिथियों का स्वागत् किया और श्रीमती पूनम चंद्रा 'मनु' को बधाई देते हुए उपन्यास पर चर्चा की। श्रीमती कृष्णा वर्मा ने इसे "चिरंतन प्रेम की तलाश करता हुआ उपन्यास" कहा और इसकी नायिका को एक सम्पूर्ण स्त्री कहा, जो अपनी बौद्धिक पहचान बनाने के लिए कोई समझौता न करते हुए अपने वादे को निभाने के लिए संघर्ष करती है। इस उपन्यास की वर्णन शैली को चित्रात्मक और काव्यात्मक बताते हुए उन्होंने 'मनु' को आगामी उपन्यासों के लिए शुभकामनाएँ दीं। मानोशी चैटर्जी ने उपन्यास के कवर चित्र की प्रशंसा करते हुए चित्रकार, श्री विजेन्द्र एस. विज को भावों की प्रस्तुति में सिद्धहस्त बताया तथा संवादों और कथानक की सरलता और प्रवाह की प्रशंसा की। डॉ. शैलजा सक्सेना ने कहा कि यह उपन्यास 'एक बड़ी पेंटिंग है' जिसे 'मनु' ने बहुत सुन्दर ढंग से बनाया है। श्री अखिल भंडारी ने उपन्यास की भाषा को रोचक बताते हुए कहानी में वर्णन के संतुलन की ओर ध्यान आकर्षित किया तथा संवादों को प्रवाहपूर्ण कहा। कार्यक्रम में कई हिंदी प्रेमी एवं अन्य गण्यमान्य अतिथि उपस्थित थे।

साभार : हिन्दी राइटर्स गिल्ड.कॉम

बर्मिंघम में 'आधुनिक साहित्य यूके' का लोकार्पण

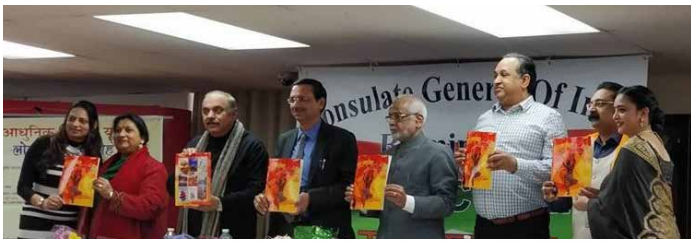

7 अप्रैल, 2018 को बर्मिंघम स्थित भारत के प्रधान कौंसलावास में 'आधुनिक साहित्य यूके' का लोकार्पण किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में श्री एस. एम. चक्रवर्ती तथा डॉ. कृष्ण कुमार उपस्थित थे। श्री तेजेन्द्र शर्मा, श्री कवींद्र कुमार सिंह, श्रीमती प्याली राय, श्रीमती गीता शर्मा, श्रीमती राखी बंसल आदि विशिष्ट अतिथि थे। इस अवसर पर माननीय श्री सतेंद्र कौर टौंक, डिप्युटी लार्ड लेफ़्टिनेंट, वेस्ट मिडलैंड डॉ. जगजीत सिंह टौंक, रग्बी के मेयर श्री रमेश श्रीवास्तव, डॉ. कृष्ण कन्हैया, यॉर्क से पधारी प्रसिद्ध कहानीकार श्रीमती ऊषा वर्मा, सर्वश्री ख्यातिनाम लेखिका शैल अग्रवाल, रमा जोशी, डॉ. चित्रा कुमार, गीता सिंह, श्रीमती इंदु बाला, सुश्री विभा केल व मीता खन्ना आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर यू.के. के विभिन्न शहरों से लेखक, पत्रकार और साहित्यानुरागी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन डॉ. आशीष कंधवे ने किया।

डॉ. आशीष कंधवे के फ़ेसबुक पृष्ठ से साभार

नई दिल्ली में कथा-संग्रह 'सात कदम' का विमोचन

5 अप्रैल, 2018 को जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली के हिंदी विभाग में प्रख्यात आलोचक और विश्व साहित्य के विद्वान, प्रो. वहाजुद्दीन अल्वी के हाथों कथाकार सुश्री जय वर्मा के कथा-संग्रह 'सात कदम' का विमोचन संपन्न हुआ। इस अवसर पर प्रो. वहाजुद्दीन अल्वी ने सारगर्भित और विचारोत्तेजक व्याख्यान दिया और कहानी पर अपने विचार व्यक्त किए। साथ ही सुश्री जय वर्मा ने अपनी कहानी 'किधर' का पाठ किया। समारोह में कई विद्यार्थी उपस्थित रहे। डॉ. कहकशाँ ए. साद ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

श्री अजय नावरिया के फ़ेसबुक पृष्ठ से साभर

पंजाब में तीन पुस्तकों का विमोचन

28 मई, 2018 को प्रीत साहित्य सदन द्वारा पंजाब के प्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. ओम प्रकाश गासो (बरमाला) की तीन नव-प्रकाशित पुस्तकों - 'समक्ष' (उपन्यास), 'रास्तों में अंधेरा क्यों है?' (काव्य-संग्रह) एवं 'भीगी गलियाँ बिखरा कांच' (काव्य रचना) का विमोचन किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री तेजिन्द्र चंडिहोक व श्री रंगीला उपस्थित थे। इस अवसर पर गुरु काशी विश्वविद्यालय, बठिन्डा से प्रो. ज्ञानी देवी गुप्त ने अपना प्रपत्र प्रस्तुत किया। श्रीमती ममता जैन व प्रधानाचार्य प्रदीप शर्मा ने अपने प्रपत्रों में तीनों पुस्तकों पर विवेचना की। इस अवसर पर एक काव्य-गोष्ठी का आयोजन भी किया गया, जिसमें बीस रचनाकारों ने अपनी-अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। मंच-संचालन डॉ. संजीव डावर ने किया।

साभार : श्री मनोज प्रीत की रिपोर्ट

नई दिल्ली में 'खिड़कियाँ' उपन्यास का लोकार्पण

7 मई, 2018 को नई दिल्ली में हिंदी एवं मराठी के सुप्रसिद्ध लेखक, डॉ. दामोदर खड़से के उपन्यास 'खिड़कियाँ' का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर कार्यालय के मंत्री, डॉ. जितेंद्र सिंह के हाथों पुस्तक का लोकार्पण संपन्न हुआ। श्री दामोदर खड़से अनेक वर्षों से साहित्य सृजन की धारा में कार्यरत हैं। इस कृति में उन्होंने भीड़ में अकेले पड़े व्यक्ति की आस्था को दर्शाया है।

श्री बी.एस. मिरगे की रिपोर्ट

दिल्ली में 'मैं ऐसा ही हूँ' काव्य-संग्रह का लोकार्पण

28 अप्रैल, 2018 को दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, दिल्ली के सभागार में विश्व हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा श्री राम कॉलिज ऑफ़ कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी विभागाध्यक्ष, एसोसिएट प्रोफ़ेसर व कवि डॉ. रवि

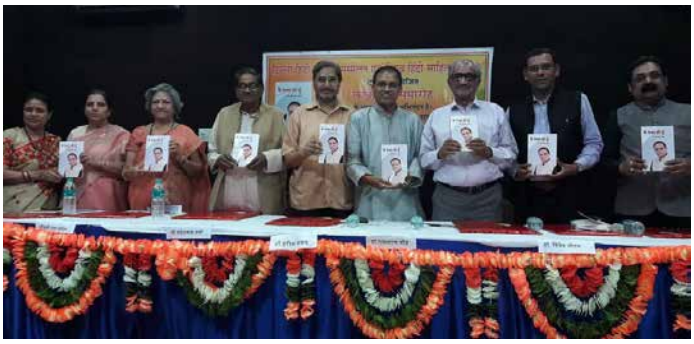

शर्मा 'मधुप' के कविता-संग्रह 'मैं ऐसा ही हूँ' का लोकार्पण किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी बोर्ड के अध्यक्ष व साहित्यकार डॉ. रामशरण गौड़ तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज कॉलिज की प्राचार्या, डॉ. रमा शर्मा एवं संपादक तथा कवि डॉ. आशीष कंधवे उपस्थित थे। लब्धप्रतिष्ठित व्यंग्यकार, डॉ. हरीश नवल ने अध्यक्षता की। हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष, श्री महेश चंद्र शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। कवि तथा इंडियन सोसायटी ऑफ़ ऑथर्स के सचिव, डॉ. विवेक गौतम ने बीज वक्तव्य दिया।

समारोह में डॉ. प्रीति प्रकाश, डॉ. रचना विमल, श्री जगदीश भारद्वाज, डॉ. सुधा शर्मा 'पुष्प', श्री राम लोचन, डॉ. अनुभव, श्री रसज्ञ शर्मा, सुरम्या शर्मा, सविता चड्ढा, सुषमा भंडारी, नीलांजन बैनर्जी, गरिमा शर्मा, श्री सुरेश चंद्र दुबे, श्री अरुण कुमार बर्मन, श्री प्रेम बिहारी मिश्र, श्री हर्षवर्धन आर्य, पूनम भाटिया और राजकुमारी शर्मा सहित अनेक साहित्यप्रेमी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन कवयित्री सरिता गुप्ता ने किया।

डॉ. विवेक गौतम के फ़ेसबुक पृष्ठ से साभार

जयपुर में कहानी-संग्रह 'मोगरी' का लोकार्पण

6 मई, 2018 को बोधि प्रकाशन सभागार, जयपुर में युवा कहानीकार मुरारी गुप्त के पहले कहानी-संग्रह 'मोगरी' का लोकार्पण प्रख्यात रूपांतरकार, नाट्यकर्मी और भारतीय पुलिस सेवा के वरिष्ठ अधिकारी सौरभ श्रीवास्तव, युवा साहित्यकार श्री ओम नगर तथा युवा समीक्षक श्री रेवंत दान के कर-कमलों द्वारा किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में कथाकार मुरारी गुप्त ने अपने संकलन 'मोगरी' की कहानियों के कुछ अंशों का पाठ किया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री सौरभ श्रीवास्तव ने कहा कि कहानी-संग्रह 'मोगरी' मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं पर रोचक और दिलचस्प पड़ताल करता हुआ आगे बढ़ता है और पाठकों को बाँधने में सफल सिद्ध होता है। उन्होंने श्री गुप्त की कहानियों को मानव जीवन के विभिन्न मनोवैज्ञानिक पहलुओं को उजागर करने वाली बताया। कार्यक्रम का संचालन श्री सालेहा गाजी ने किया।

यूनीवार्ता के वेबसाइट से साभार

लखनऊ में 'दिल्ली की बुलबुल' कहानी-संग्रह का लोकार्पण

8 मई, 2018 को लखनऊ, उत्तर प्रदेश के राजभवन में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल, महामहिम श्री राम नाईक के हाथों डॉ. अनीता भटनागर जैन द्वारा लिखित 'दिल्ली की बुलबुल' कहानी-संग्रह का विमोचन किया गया।

महामहिम श्री राम नाईक ने कहा कि डॉ. अनीता भटनागर जैन ने अपने अनुभव के आधार पर काल्पनिक नहीं वरन् वास्तविकता के धरातल पर आकर लिखा है। मुख्य सचिव, श्री राजीव कुमार ने बधाई देते हुए कहा कि पर्यावरण की दृष्टि से संदेश देने वाली पुस्तक 'दिल्ली की बुलबुल' की कहानियाँ नई पीढ़ी को ज्ञान बाँटने का प्रयास करेंगी।

डॉ. अनीता भटनागर जैन ने बताया कि पक्षियों की आवासीय समस्या को केन्द्र में रखकर 'दिल्ली की बुलबुल' पुस्तक लिखी गई है। इस अवसर पर मुख्य सचिव, श्री राजीव कुमार, जल निगम के अध्यक्ष, श्री जी. पटनायक, उत्तर प्रदेश नगर पालिका वित्तीय संसाधन विकास बोर्ड के अध्यक्ष, श्री राकेश गर्ग, राज्यपाल की प्रमुख सचिव, सुश्री जूथिका पाटणकर, प्रमुख सचिव (सूचना), श्री अवनीश अवस्थी, प्रमुख सचिव (खादी एवं ग्रामोद्योग), श्री नवनीत सहगल सहित अन्य वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारीगण भी उपस्थित थे। श्री विशाल जैन ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

साभार : अपवा न्यूज़, देश का आईना

प्रो. अरुण कुमार भगत की दो पुस्तकों का विमोचन

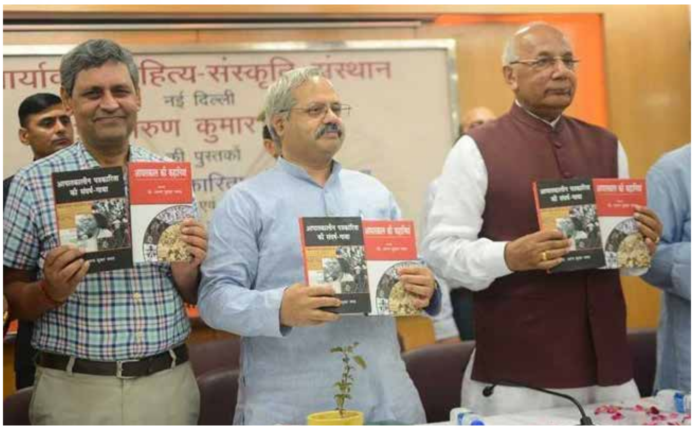

30 जून, 2018 को नई दिल्ली में हरियाणा के राज्यपाल, महामहिम प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी के कर-कमलों द्वारा प्रो. अरुण कुमार भगत की दो पुस्तकों - 'आपातकालीन पत्रकारिता की संघर्ष गाथा' और 'आपातकाल की कहानियाँ' का विमोचन किया गया। महामहिम प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे तथा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय संगठन मंत्री, श्री सुनील आंबेकर विशिष्ट अतिथि रहे। इस अवसर पर हरियाणा के राज्यपाल, महामहिम प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी ने कहा कि एक दूरदर्शी लेखक अगली पीढ़ी तक के लिए सोचता है। समारोह के दौरान महात्मा गांधी के विचारों पर चर्चा की गई। इस अवसर पर माखन लाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति, श्री अच्युतानंद मिश्र व हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद के अध्यक्ष, डॉ. उदय प्रताप सिंह उपस्थित थे।

साभार : खबर.एंडीटीवी.कॉम

सम्मान / पुरस्कार

डॉ. कमल किशोर गोयनका को 'डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान'

15 अप्रैल, 2018 को कोलकाता के स्थानीय ओसवाल भवन सभागार में 29वें डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान समारोह के उपलक्ष्य में डॉ. कमल किशोर गोयनका को सम्मानित किया गया। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल महामहिम श्री केशरीनाथ त्रिपाठी मुख्य अतिथि व अध्यक्ष रहे। डॉ. गोयनका ने कहा कि स्वराज की प्राप्ति और भारत की आत्मा की रक्षा करना ही प्रेमचंद के साहित्य का उद्देश्य था। डॉ. अवनिश अवस्थी, डॉ. जिष्णु बसु, प्रो. ब्रजकिशोर शर्मा एवं श्री सज्जन कुमार तुल्स्यान आदि ने वक्ता के रूप में डॉ. हेडगेवार के उदात्त जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन कुमारसभा के अध्यक्ष डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन श्री विमल लाठ ने किया।

श्री महावीर बजाज की रिपोर्ट

मॉरीशस में श्री अभिमन्यु अनत को 'राष्ट्रीय सम्मान'

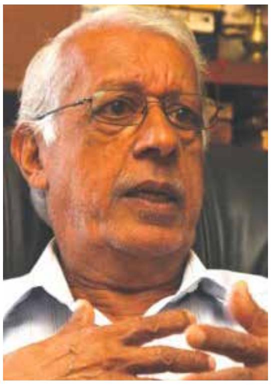

16 मई, 2018 को रावेनाला आटिट्यूड हॉटल, बालाक्लावा में मॉरीशस की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में कला व संस्कृति मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय सम्मान समारोह के प्रथम संस्करण का शुभारंभ किया गया। मॉरीशस के सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य को आकार देने में जिन कलाकारों ने अमूल्य योगदान दिया है, उनको इस समारोह में विधिवत सम्मानित किया गया। इन कलाकारों की मौलिकता और रचनात्मकता को ध्यान में रखते हुए कला एवं संस्कृति मंत्रालय की ओर से पुरस्कारों को छः श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था - संगीत, रंगमंच, सिनेमा, नृत्य, साहित्य एवं दृश्य कला। इसके अंतर्गत साहित्य की श्रेणी में प्रसिद्ध मॉरीशसीय हिंदी लेखक श्री अभिमन्यु अनत को प्रधानमंत्री माननीय श्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ के हाथों 'राष्ट्रीय सम्मान' से विभूषित किया गया। अस्वस्थ होने के कारण श्री अभिमन्यु अनत कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके थे, अंत: उनकी जगह उनके पुत्र श्री रत्नेश अनत ने पुरस्कार ग्रहण किया। साथ ही संगीत के क्षेत्र में श्री सेर्ज़ लेब्रास, रंगमंच के क्षेत्र में श्री गास्तों वलाइदेन, सिनेमा के क्षेत्र में श्री सुरेंद्र बृजमोहन, नृत्य के क्षेत्र में सुश्री आन्ना पातेन तथा दृश्य कला के क्षेत्र में श्री वाको बाइसाक को राष्ट्रीय सम्मान से विभूषित किया गया।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री माननीय श्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ ने कहा कि विभिन्न उपायों तथा कार्यवाहियों के माध्यम से सरकार सृजनात्मक कला उद्योग को बढ़ाने में कटिबद्ध है।

कला व संस्कृति मंत्री माननीय श्री पृथ्वीराजसिंह रूपन ने स्थानीय कलाकारों के योगदान की सराहना की और भावी कार्यों हेतु उनको प्रोत्साहित किया।

अन्य मंत्री गण तथा गण्यमान्य अतिथि भी समारोह में उपस्थित थे।

देफ़ी मीडिया.इन्फ़ो से साभार

चाँदपुर में साहित्यिक सम्मान समारोह, काव्य-गोष्ठी एवं पुस्तक लोकार्पण

25 मई, 2018 को चाँदपुर में बृजप्रभा साहित्य एवं कला मंच के तत्वावधान में नटराज रेस्टोरेंट के सभागार में एक साहित्यिक सम्मान समारोह, काव्य-गोष्ठी एवं पुस्तक लोकार्पण का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि वरिष्ठ गीतकार डॉ. बुद्धिनाथ तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. करण सिंह चौहान रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सहारनपुर से पधारे सुप्रसिद्ध गीतकार श्री राजेन्द्र राजन ने की। कार्यक्रम के प्रथम चरण में अंग्रेज़ी की एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. सारिका मुकेश के नवीनतम कविता-संग्रह 'साँसों के अनुबंध' और हाइकु-संग्रह 'शब्द-शब्द ज़िंदगी' का लोकार्पण मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया। इस अवसर पर एक काव्य-पाठ का आयोजन किया गया।

द्वितीय चरण में श्री नरेंद्र त्यागी का माल्यार्पण कर शॉल प्रदान कर उन्हें 'सारस्वत सम्मान' दिया गया। अपने भाषण में डॉ. कृष्ण कुमार नाज़ ने कहा कि अपने साहित्य, सभ्यता और संस्कृति से ओतप्रोत इस तरह के कार्यक्रमों की अपनी अलग महत्ता है। श्री मुकेश त्यागी ने कहा कि संस्था हर वर्ष इस तरह का एक साहित्यिक कार्यक्रम कराने का प्रयास करेगी और नगर के नये और पुराने साहित्यकारों को एक साझा मंच प्रदान करेगी, जिससे वे स्वयं की प्रतिभा को साहित्यिक जगत् में उजागर कर सकें। इस अवसर पर डॉ. अजय जनमेजय, डॉ. अनिल चौधरी, श्री संजय गुप्त, श्री सुभाष जावा, श्रीमती रचना त्यागी, श्री अवनीश त्यागी, श्रीमती नीलिमा त्यागी एवं अन्य गण्यमान्य अतिथि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री मुकेश त्यागी ने किया तथा आभार-ज्ञापन डॉ. सारिका मुकेश ने किया।

श्री मुकेश त्यागी की रिपोर्ट

डॉ. एच. ए. हुनगुंद को 'हिंदी सेवी प्रचारक सम्मान'

5 अप्रैल, 2018 को महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, राष्ट्रभाषा संकुल नागपुर में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार एवं केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली के सहयोग से अभ्युदय बहुद्देशीय संस्था द्वारा वर्ष 2017-18 हेतु महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के भाषा

विद्यापीठ के सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. एच. ए. हुनगुंद को **'हिंदी सेवी प्रचारक सम्मान'** प्रदान किया गया। इस अवसर पर पूर्व विधायक, समाजसेवी श्री गिरीश गांधी, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. गिरीश्वर मिश्र, रामदेव बाबा अभियांत्रिकी महाविद्यालय नागपुर के विभागाध्यक्ष, प्रो. विनय बारहाते, अभ्युदय बहुद्देशीय संस्था के अध्यक्ष श्री वैद्यनाथ अय्यर तथा सचिव, श्री नरेंद्र दंडारे उपस्थित थे।

साभार : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

श्री ज्ञानेंद्र कुमार को 'आस्था सम्मान'

25 अप्रैल, 2018 को राजपुर मार्ग, इन्द्रलोक सभागार में हिमालय पर्यावरण सोसाइटी, देहरादून द्वारा साहित्य, कला, संगीत में विशेष योगदान के लिए कवि श्री ज्ञानेंद्र कुमार को 'आस्था सम्मान' से अलंकृत किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ विशिष्ट अतिथि शिक्षाविद् डॉ. प्रेमचंद जोशी ने किया। समारोह में दिल्ली दूरदर्शन के पूर्व स्टेशन इंजीनियर, श्री ओ. पी. गुप्त ने साहित्य के क्षेत्र में श्री कुमार के योगदान की सराहना की। इस अवसर पर संस्था द्वारा प्रकाशित श्री राजेश डोभाल के काव्य-संग्रह *'आस्था'* का लोकार्पण भी हुआ। कार्यक्रम में श्री डी. एन. भटकोटी, श्रीमती सविता कपूर, शायर नदीम बर्नी, श्रीमती कृष्णा शर्मा, समाजसेविका वन्दना शर्मा एवं कवि रईस अहमद आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री बाबला ने किया।

श्री ज्ञानेंद्र कुमार की रिपोर्ट

डॉ. जवाहर कर्नावट द्वारा रचित पुस्तक को राष्ट्रीय पुरस्कार

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन कार्यरत संस्था

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् प्रतिवर्ष तकनीकी पाठ्य पुस्तकों के लेखकों को पुरस्कृत करती है। इस योजना के अंतर्गत डॉ. जवाहर कर्नावट एवं श्री देवेन्द्र खरे द्वारा लिखी गई पुस्तक 'आधुनिक भारतीय बैंकिंग : सिद्धांत एवं व्यवहार' को दिल्ली में परिषद् के सभागार में आयोजित समारोह में मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री, डॉ. सत्यपाल सिंह ने पुरस्कृत किया। इस अवसर पर परिषद् के अध्यक्ष, श्री अनिल सहस्रबुद्धे एवं देश के गण्यमान्य नागरिक भी उपस्थित थे।

डॉ. जवाहर कर्नावट की रिपोर्ट

श्रद्धांजलि

श्री अभिमन्यु अनत

4 जून, 2018 को मॉरीशस के वरिष्ठ हिंदी सेवी, लेखक व प्रचारक श्री अभिमन्यु अनत का 81 वर्ष की आयु में निधन हो गया। श्री अभिमन्यु अनत मॉरीशस के हिंदी कथा साहित्य के सम्राट माने जाते हैं। शांत एवं सौम्य व्यक्तित्व के धनी श्री अभिमन्यु अनत केवल मॉरीशस ही नहीं, वरन् पूरे हिंदी जगत् के शिरोमणि हैं। अभिमन्यु अनत अपने देश के भूमिपुत्र तथा राष्ट्रीय उपन्यासकार माने जाते हैं।

जीवन

श्री अभिमन्यु अनत का जन्म 9 अगस्त, 1937 को मॉरीशस के त्रिओले गाँव में हुआ था। आपके पूर्वज भारतीय आप्रवासी थे। आपका जन्म यद्यपि एक संपन्न परिवार में हुआ था, तथापि, आपके पिता श्री पतिसिंह के दयालु स्वभाव एवं समाज के प्रति पूर्णत: समर्पण के कारण, आपका बचपन काफ़ी हद तक अभावों में बीता। आपके पिता तथा माता सुभागो, दोनों हिंदी के अच्छे पाठक और क्रमश: प्रेमचन्द और शरतचंद्र से अत्यन्त प्रभावित थे। इसलिए आप पर भी इन लेखकों का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था।

उन दिनों घरों एवं गाँवों में किस्सागोई का प्रचलन था। पूर्वजों के इतिहास को कहानी के रूप में सुनाने की प्रवृत्ति के चलते ही अभिमन्यु अनत को भारतीय आप्रवासी समाज द्वारा व्यतीत, यातनापूर्ण जीवन का अच्छा ज्ञान प्राप्त हुआ। वहीं पर पले-बढ़े अभिमन्यु अनत ने हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि में जो सहयोग दिया है, वह प्रशंसनीय है। आपका मूल भारत की ही मिट्टी है। भारतीय पृष्ठभूमि ने आपको हिंदी की सेवा के लिए उत्साहित किया और आपने अपने पूर्वजों की मातृभूमि का ऋण अच्छी तरह से चुकाया।

कर्म क्षेत्र

यद्यपि अनत जी अपने पूर्वजों की मातृभूमि, भारत और उसकी संस्कृति के प्रति सदा नतमस्तक रहे, फिर भी आपकी कर्मभूमि मॉरीशस की धरती रही। सामान्यत: अभिमन्यु अनत एक लब्धप्रतिष्ठ कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, चित्रकार एवं सम्पादक के रूप में कला के सेवक रहे। किन्तु आपकी ख्याति आपके कथा-साहित्य, विशेषकर उपन्यास-साहित्य के कारण है।

आपने हिंदी शिक्षण, रंगमंच, हिंदी प्रकाशन आदि अनेक क्षेत्रों में कार्य किए हैं। आप अनेक वर्षों तक महात्मा गांधी संस्थान की हिंदी साहित्यिक पत्रिका 'वसंत' एवं 'रिमझिम' बाल-पत्रिका के संपादक एवं सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग के अध्यक्ष रहे। आप 'वसंत' एवं 'रिमझिम' के संस्थापक भी थे। दो वर्ष महात्मा गांधी संस्थान में हिंदी अध्यक्ष रहे व तीन वर्ष युवा मंत्रालय में नाट्य कला विभाग में नाट्य प्रशिक्षक के पद पर रहने के अतिरिक्त, 18 वर्षों तक आपने प्राथमिक स्तर पर हिंदी अध्यापन कार्य किया। आपका साहित्य अनेक विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में सम्मिलित है तथा आप पर अनेक शोधकार्य किए जा चुके हैं।

अभिमन्यु अनत और हिंदी

मॉरीशस में अंग्रेज़ी और फ़्रेंच भाषाओं, क्रियोली बोली आदि के होते हुए हिंदी को साहित्य-सृजन के माध्यम रूप में प्रयुक्त करना, वस्तुत: अभिमन्यु अनत का हिंदी भाषा के प्रति लगन, सम्मान और रुचि का प्रमाण है। हिंदी भाषा के प्रति आपका यह विचार उल्लेखनीय है -

"मैं हिंदी और केवल हिंदी में इसलिए लिखता हूँ क्योंकि यह भाषा मेरी अपनी धमनियों में दौड़ती रहनेवाली भाषा है, क्योंकि इस भाषा को मैंने स्कूल-कॉलेजों में नहीं सीखा, यह मुझे मेरे वंश से मिली है। हिंदी मेरे देश की मिट्टी की सौंधी गंध अपने में लिए हुई है।"

प्रकाशन
मॉरीशस में हिंदी साहित्य और अभिमन्यु अनत एक दूसरे के पूरक हैं। मॉरीशस के महान कथा-शिल्पी अभिमन्यु अनत ने हिंदी कविता को भी एक नया आयाम दिया है। अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित, अनत जी की कविताओं का भारत के हिंदी साहित्य में भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। विद्रोही लेखक की छवि धारण कर आपने सदैव हिंदी प्रसार की बात की। आपकी लेखनी में सदैव आमजन की भावना मुखरित होती है तथा मॉरीशस के आमजन की परेशानियों को उकेरा जाता रहा है। आपको कभी भी सत्ता का भय आक्रांत नहीं कर पाया। आपने कई बार अपनी लेखनी के माध्यम से सत्ता को चुनौती दी। हिंदी साहित्य में आपकी लेखनी अतुल्य है। आपकी कविताओं में शोषण, दमन और अत्याचार के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद की गई है। बेरोज़गारी की समस्या पर भी आपकी दृष्टि गई है। आपने साहित्य की विभिन्न विधाओं में 60 से अधिक पुस्तकों की रचना की। आपके 29 उपन्यास छप चुके हैं। आपका पहला उपन्यास 'और नदी बहती रही' सन् 1970 में छपा। आपका उपन्यास 'लाल पसीना', जिसे महाकाव्यात्मक उपन्यास माना जाता है, एक कालजयी कृति के रूप में विख्यात हो चुका है। 'कैक्टस के दाँत' व 'नागफ़नी में उलझी साँसें' (कविता-संग्रह), 'विरोध' व 'गूँगा इतिहास' (नाटक), 'खामोशी के चीत्कार' व 'इंसान और मशीन' (कहानी-संग्रह), 'लहरों की बेटी', 'एक बीघा प्यार', 'गांधीजी बोले थे', 'हम प्रवासी' व 'प्रिया' (उपन्यास) इत्यादि आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं। आपकी रचनाओं का अनुवाद अंग्रेज़ी, फ्रेंच सहित अनेक भाषाओं में किया गया है। सन् 1979 में भारत में हिंदी साहित्य संस्थान, उत्तर प्रदेश की ओर से आपको अपने सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वप्रसिद्ध उपन्यास 'लाल-पसीना' के लिए पुरस्कृत किया गया था। सन् 1983 में फ्रांसिसी सरकार ने आपको अपनी सोलह कहानियों के एक संग्रह के प्रकाशन में वित्तीय सहयोग दिया था।

सम्मान
आपको अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जैसे 'साहित्य अकादमी मानद महत्तर सदस्यता', 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार', 'मैथिलीशरण गुप्त सम्मान', 'यशपाल पुरस्कार', 'जन संस्कृति सम्मान', 'उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार', 'मॉरीशस का राष्ट्रीय सम्मान' आदि।

अभिमन्यु अनत पर कुछ हिंदी विद्वानों के विचार
अभिमन्यु अनत मॉरीशस के प्रवासी मज़दूरों की जातीय ज़िन्दगी का इतिहास रचते हैं। उनके बारे में 2009 के प्रसिद्ध फ्रांसिसी नोबेल पुरस्कार विजेता ज़ाँ मारी लेक्लेज़्यो का 'लाल पसीना' के बारे में यह कहना है कि *"यह गाथा उन लोगों की है, जिन्होंने अपने हाथों धरती को आकार दिया और सींचा अपने पसीने की बूंदों से।"* पिछले 4 जून 2018 को उनका निधन हो गया। उनका जाना, एक बड़े लेखक का जाना है, उस लेखक का जाना जिसे इतिहास, परम्परा और समाज की जातीय ज़िन्दगी में गहरी दिलचस्पी थी। जिसके लिए साहित्य सिर्फ़ मनबहलाव की वस्तु नहीं था, अपितु देश की जातीय ज़िन्दगी को जानने और समझने का एक बड़ा ज़रिया था।

प्रो. देवेन्द्र चौबे

अभिमन्यु अनत को मॉरीशस के साथ हिंदी साहित्य के इतिहास में अनेक कारणों से याद किया जाता रहेगा। वे अपने देश के साहित्य के सम्राट हैं।...उसका साहित्य पूर्वजों की वेदना, त्रासदी, शोषण और गुलामी के दर्द का महाख्यान है और 'लाल पसीना' उसकी कालजयी कृति।
डॉ. कमल किशोर गोयनका

अभिमन्यु हैं अलग से। वह सचमुच के अभिमन्यु हैं। वह महाभारत के अभिमन्यु हैं। विशेषकर उपन्यास के संसार में आज वे अद्वितीय हैं, इने-गिने में से एक हैं।

ब्रजेन्द्र कुमार भगत 'मधुकर'

स्रोत : विश्व हिंदी सचिवालय तथा भारतकोश

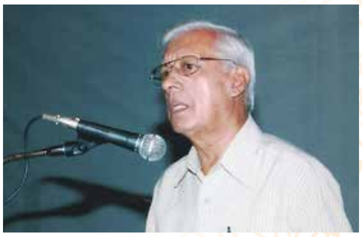

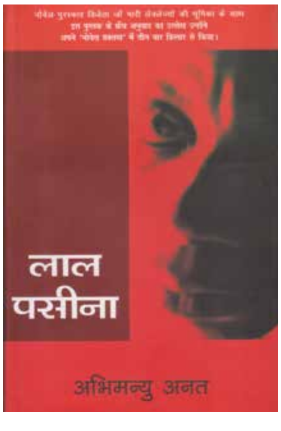

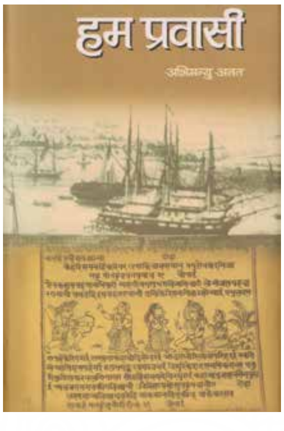

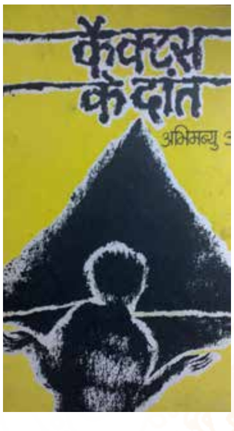

श्रद्धांजलि

प्रो. केदारनाथ सिंह

19 मार्च, 2018 को प्रसिद्ध कवि तथा जे.एन.यू. के भूतपूर्व प्रोफ़ेसर, श्री केदारनाथ सिंह का 83 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 7 जुलाई, 1934 को उत्तर प्रदेश के बलिया ज़िले के चकिया गाँव में हुआ था। आपने 1956 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. और 1964 में पी.एच.डी. की। आप कई महाविद्यालयों में प्राध्यापक रहे तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हुए। 2013 में आपको '49वें ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त आपको 'मैथिलीशरण गुप्त सम्मान', 'कुमारन आशान पुरस्कारम्', 'जीवन भारती सम्मान', 'दिनकर पुरस्कार', 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' तथा 'व्यास सम्मान' से विभूषित किया गया।

'अभी बिल्कुल अभी', 'ज़मीन पक रही है', 'यहाँ से देखो', 'बाघ', 'अकाल में सारस', 'उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ', 'टॉलस्टॉय और साइकिल' जैसे कविता संग्रह, 'कल्पना और छायावाद', 'आधुनिक हिंदी कविता में बिंब विधान', 'मेरे समय के शब्द', 'मेरे साक्षात्कार' जैसी आलोचनात्मक कृतियाँ, 'ताना-बाना' (आधुनिक भारतीय कविता से एक चयन), 'समकालीन रूसी कविताएँ', 'कविता दशक', 'साखी' (अनियतकालिक पत्रिका), 'शब्द' (अनियतकालिक पत्रिका) के संपादन कार्य आपके प्रमुख प्रकाशन हैं।

साभार : भारत डिस्कवरी.ऑर्ग

श्री बालकवि बैरागी

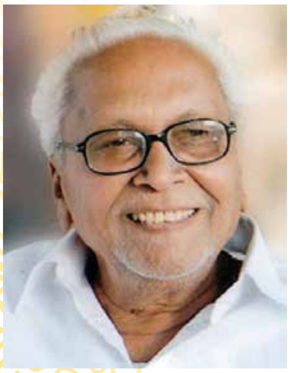

13 मई, 2018 को प्रसिद्ध साहित्यकार श्री बालकवि बैरागी का 87 वर्ष की आयु में देहांत हो गया। आपका जन्म 10 फ़रवरी 1931 को मंदसौर ज़िले की मनासा तहसील के रामपुर गाँव में हुआ था। आपने विक्रम विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. किया। आप केंद्रीय हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य रहे। राजनीति एवं साहित्य, दोनों से जुड़े रहने के कारण आपकी रचनाओं में इसकी झलक पाई जाती है। आप मध्य प्रदेश सरकार के मंत्री तथा लोकसभा के सदस्य रहे तथा हिंदी काव्य-मंचों पर भी लोकप्रिय रहे। आपको मध्य प्रदेश सरकार द्वारा 'कवि प्रदीप सम्मान' सहित कई सम्मानों से अलंकृत किया जा चुका है। 'मैं उपस्थित हूँ यहाँ', दीवट (दीप पात्र) पर दीप', 'झर गये पात', 'गन्ने मेरे भाई!!', 'जो कुटिलता से जीएँगे', 'अपनी गंध नहीं बेचूँगा', 'मेरे देश के लाल', 'नौजवान आओ रे !', 'सारा देश हमारा' आदि आपकी प्रतिनिधि रचनाएँ हैं। आपने बाल कविताएँ और फ़िल्मी गीत भी लिखे हैं।

श्री प्राण शर्मा

25 अप्रैल, 2018 को लेखक श्री प्राण शर्मा का 80 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 13 जून, 1937 को वज़ीराबाद, पाकिस्तान में हुआ था। आपने अपनी प्राथमिक शिक्षा दिल्ली में प्राप्त की तथा पंजाब विश्वविद्यालय से एम.ए., बी.एड. किया। आपकी रचनाएँ युवावस्था से ही पंजाब के दैनिक पत्र, 'वीर अर्जुन' एवं 'हिंदी मिलाप', ज्ञानपीठ की पत्रिका 'नया ज्ञानोदय' जैसी अनेक उच्च कोटि की पत्रिकाओं और अंतरजाल के विभिन्न वेब्स पर प्रकाशित होती रही हैं। आप हिंदी ग़ज़लों और गीतों में शब्दों के विलक्षण प्रयोग के लिए जाने जाते हैं। आपको कई प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त हैं। आपको हिंदी समिति, लंदन द्वारा सम्मानित तथा भारतीय उच्चायोग, यू.के. द्वारा साहित्य के विशिष्ट सम्मान से विभूषित किया गया है। 'ग़ज़ल कहता हूँ', 'सुराही' (मुक्तक-संग्रह), 'घर वापस जाने की सुध-बुध बिसराता है मेले में', 'आँखों में कभी अश्कों को भर कर नहीं जाते', 'कौन उस-सा फ़क़ीर होता है', 'जग में मुरीद अपना बनाता किसे नहीं', 'उड़ते हैं हज़ारों आकाश में पंछी' आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं। पत्र-पत्रिकाओं में भी आपके लेख प्रकाशित हैं।

साभार : कविता कोश.ऑर्ग

श्री राजकिशोर

4 जून 2018 को वरिष्ठ पत्रकार, लेखक व कवि श्री राजकिशोर का दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में निधन हो गया। आप 71 साल के थे। श्री राजकिशोर का जन्म 2 जनवरी 1947 को पश्चिम बंगाल के कोलकाता में हुआ था। आप बदलाव के पक्षधर थे और समाज में इस बदलाव को होते हुए देखना चाहते थे। आप पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय थे और अपने कार्यकाल में आपने खुलकर अपने विचार रखे। वैचारिक लेखन में आपकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुईं। 'पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य', 'धर्म', 'सांप्रदायिकता और राजनीति', 'एक अहिंदू का घोषणापत्र', 'जाति कौन तोड़ेगा', 'रोशनी इधर है', 'सोचो तो संभव है', 'स्त्री-पुरुष : कुछ पुनर्विचार', 'स्त्रीत्व का उत्सव', 'गांधी मेरे भीतर', 'गांधी की भूमि से' आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं। आपकी रचनाओं में व्यंग्य भी शामिल हैं। आपने 'दूसरा शनिवार', 'आज के प्रश्न' पुस्तक श्रृंखला, 'समकालीन पत्रकारिता : मूल्यांकन और मुद्दे' का संपादन किया। उपन्यास में 'तुम्हारा सुख' तथा 'सुनंदा की डायरी' आपकी मुख्य कृतियाँ रहीं। 'पाप के दिन' आपका चर्चित कविता-संग्रह है। आपने पत्रकारिता, उपन्यास, कविता, व्यंग्य जैसी कई विधाओं में अपनी प्रतिभा दिखाई।

आप पत्रकार होने के साथ ही साहित्यकार भी थे। हिंदी साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए आपको 'लोहिया पुरस्कार', 'साहित्यकार सम्मान', हिंदी अकादमी, दिल्ली तथा 'राजेंद्र माथुर पत्रकारिता पुरस्कार', बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना से सम्मानित किया गया है।

साभार : अमर उजाला

प्रधान संपादक	: प्रो. विनोद कुमार मिश्र
संपादक	: डॉ. माधुरी रामधारी
सहायक संपादक	: श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी
टंकण टीम	: श्रीमती त्रिशिला आपेगाडु, सुश्री जयश्री सिबालक, श्रीमती विजया सरजु
पता	: विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस
	: World Hindi Secretariat, Independance Street, Phoenix 73423, Mauritius
फ़ोन	: (230) 660 0800
फ़ैक्स	: (230) 606 4855
इ-मेल	: info@vishwahindi.com
डेटाबेस	: www.vishwahindidb.com
वेबसाइट	: www.vishwahindi.com

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

संपादकीय

हिंदी-महाकुम्भ का उत्साहपूर्ण आयोजन

10 अप्रैल 2018 को 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के वेबसाइट एवं 'लोगो' के लोकार्पण के उपरान्त देश-विदेश में हिंदी की विश्व-धारा में प्रवाहित होने की उमंग पुनः बलवती हुई। हिंदी की अंतरराष्ट्रीय भावना सस्वर मुखरित होने लगी और इस उठती नई लहर में विश्व के कोने-कोने से हिंदी प्रेमी फ़ोन तथा इमेल द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय से सीधा सम्पर्क करते हुए सम्मेलन की अधिक-से-अधिक जानकारियाँ प्राप्त करने में प्रयासरत हो गए हैं। गिरमिटिया देशों के हिंदी प्रचारक विशेष जागरूकता के साथ सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए अपने देश के प्रतिनिधि मंडल की तैयारी में परिश्रमपूर्वक संलग्न हैं और उनके द्वारा सम्मेलन के सफल आयोजन की हार्दिक शुभकामनाएँ भी प्रेषित की जा रही हैं। साथ ही हिंदी के विराट् यज्ञ में हाथ बँटाने के सुन्दर प्रस्ताव भी सामने आ रहे हैं। विवेच्य प्रतिक्रियाएँ वैश्विक स्तर पर हिंदी की गहरी लोकप्रियता का बोध कराती हैं।

भारत तथा मॉरीशस में 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन का उत्साह ज़ोर पकड़ रहा है। दोनों देशों की सरकारें भिन्न-भिन्न समितियाँ गठित करके तथा नियमित रूप से बैठकें आयोजित कर सम्मेलन की सफलता का मार्ग बड़े मनोयोग से प्रशस्त कर रही हैं। किसी समिति में पंजीकरण व प्रतिभागिता तथा प्रतिभागियों की हवाई-यात्रा और मॉरीशस में उनके आवास तथा यातायात की सुविधाओं के प्रबंध हेतु विचार-विमर्श हो रहा है, तो किसी अन्य समिति का ध्यान दैनिक कार्यक्रम, सांस्कृतिक कार्यक्रम, कवि-सम्मेलन और प्रदर्शनी की तैयारियों पर केन्द्रित है। कभी शैक्षिक सत्रों के विषय-चयन के लिए बैठक हो रही है, तो कभी सम्मेलन-स्थल के विभिन्न कक्षों के नामों का चयन करने के उद्देश्य से समिति बुलाई जा रही है। जलपान तथा दिवस और रात्रि के भोजन की समुचित व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। आयोजन के हरेक महत्त्वपूर्ण पड़ाव को पार करने के साथ-साथ हिंदी के चहुँमुखी विकास की आकांक्षा का तीव्र होना स्वाभाविक है।

विश्व हिंदी सचिवालय ने अप्रैल महीने से ही विश्व हिंदी समुदाय के सदस्यों के साथ सम्मेलन सम्बन्धी पत्राचार की शृंखला प्रारम्भ कर दी है। सचिवालय द्वारा सम्मेलन से जुड़ने के निवेदन के प्रत्युत्तर में विभिन्न देशों के हिंदी प्रेमी अगस्त में होने वाले हिंदी के महाकुम्भ में अपनी उपस्थिति की सहर्ष संपुष्टि कर चुके हैं। कई अन्य हिंदी अनुरागी शीघ्र ही पंजीकरण करने का अपना निर्णय साझा कर रहे हैं और कुछ पंजीकृत प्रतिभागी फ़्लाइट तथा हॉटल की बुकिंग की प्रक्रिया में लगे हैं।

मई के मध्य में जब सम्मेलन में प्रतिभागिता के लिए ऑनलाइन पंजीकरण की कुछ समस्याएँ सामने आयीं तब विश्व हिंदी सचिवालय ने 'सहायता पटल' की स्थापना की। परिणामस्वरूप प्रतिदिन सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं के सदस्य, हिंदी प्राध्यापक, शिक्षक, लेखक, प्रचारक एवं छात्र पंजीकरण की उपलब्ध सुविधाओं का यथोचित लाभ उठा रहे हैं। इस क्रम में विशेष आनंदप्रद घटना जून के अंतिम सप्ताह में घटी, जब पूरी बस भरकर वरिष्ठ महिलाएँ गाती और ढोलक बजाती हुईं सचिवालय के कार्यालय के सामने पहुँचीं। सम्मेलन के लिए अपना ऑनलाइन पंजीकरण करने के बाद उनकी प्रसन्नता देखते ही बनती थी। । एक वृद्धा के मुख से निकला - "पच्चीस साल बाद मॉरीशस में विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लेने का अवसर मिल रहा है, अब पता नहीं इस जीवन में पुनः ऐसा मौका मिले या नहीं।"

पंजीकृत प्रतिभागी अनेक प्रकार की इच्छाएँ व अपेक्षाएँ प्रकट कर रहे हैं। कोई शैक्षिक सत्र में अपना शोधपूर्ण आलेख प्रस्तुत करना चाहता है, तो कोई कवि-सम्मेलन में स्वरचित कविता-पाठ करने की इच्छा व्यक्त कर रहा है। कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम या प्रदर्शनी में भाग लेना चाहता है, तो कोई अपनी पुस्तक या पत्रिका का विमोचन या वितरण करने का अभिलाषी है। कोई देश-विदेश के प्रतिनिधियों के साथ जुड़ने के लिए लालायित है, तो कोई विशेषकर विविध देशों से आने वाले प्रतिष्ठित लेखकों का सान्निध्य पाकर घनिष्ठता के सूत्र में आबद्ध होना चाहता है। कोई मीडिया कर्मी के रूप में अपनी भूमिका निभाने का आकांक्षी है, तो कोई विदेशी हिंदी प्रेमियों के आतिथ्य का आत्मिक सुख प्राप्त करना चाहता है। अलग-अलग प्रकार से सम्मेलन का लाभ उठाने या इस भव्य समारोह के दौरान सहयोग करने की कामनाओं की अभिव्यक्ति हिंदी के प्रति गहन लगाव की परिचायिका है।

11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के महत्त्व और उससे संबंधित हिंदी की भावी संभावनाओं पर प्रकाश डालने के लक्ष्य से विश्व हिंदी सचिवालय ने अपने मुख्यालय, फ़ेनिक्स में आठ परिचर्चा-बैठकों की व्यवस्था की है। 3 जून 2018 से 27 जुलाई 2018 तक हर सप्ताह होने वाली इन परिचर्चा-बैठकों में क्रमिक रूप से सम्मेलन में सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं के सदस्यों, हिंदी लेखकों, मीडिया कर्मियों, प्राध्यापकों, शिक्षकों, महिलाओं, युवाओं एवं छात्रों की भूमिका पर विचार-विमर्श किया जा रहा है। जून महीने में चार परिचर्चा-बैठकें सफलतापूर्वक संपन्न हुईं और जुलाई में चार बैठकें होनी शेष हैं। इन बैठकों में दिए जा रहे उपयुक्त सुझावों के अनुरूप कदम उठाते हुए 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में हिंदी क्षेत्र के समस्त कार्यकर्ताओं की सक्रिय व सार्थक भागीदारी सुनिश्चित करने की निरंतर कोशिश की जा रही है।

सम्मेलन जैसे-जैसे निकट आ रहा है, वैसे-वैसे हिंदी का वातावरण अधिक उर्वर बनाने की आवश्यकता की अनुभूति प्रखरतर हो रही है। इस संदर्भ में विश्व हिंदी सचिवालय ने कविता, कहानी, लघुकथा, एकांकी, नाटक, निबंध, रिपोर्ताज, संस्मरण, यात्रावृत्तांत और रेखाचित्र विधाओं में सृजनात्मक लेखन प्रतियोगिता का आयोजन करते हुए विविध आयु वर्ग के विजेताओं के लिए सम्मेलन के पंजीकरण शुल्क के प्रायोजन की भी व्यवस्था की है। दूसरी ओर जुलाई तथा अगस्त महीने में 'ले मोरिस्यें' एवं 'मॉरीशस टाइम्स' समाचार-पत्रों में अंग्रेज़ी तथा फ्रेंच भाषाओं में सूचनापरक लेख प्रकाशित करने की योजना बनी है, ताकि अहिंदी भाषी भी विश्व हिंदी सम्मेलनों के इतिहास, उद्देश्यों, विषयों तथा पारित अनुशंसाओं के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकें।

जन साधारण में गहन जारूकता पैदा करने के सतत् प्रयास में विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन के सहयोग से दो महीने लगातार राष्ट्रीय टेलीविजन एवं रेडियो पर सम्मेलन से संबंधित बहुरंगीन कार्यक्रम प्रस्तुत करने जा रहा है। रेडियो चैनलों पर प्रतिदिन हिंदी भाषा व साहित्य से संबंधित वरेण्य विद्वानों के अनमोल विचार प्रस्तुत किए जाएँगे और रेडियो तथा टेलीविजन दोनों दृश्य-श्रव्य माध्यमों द्वारा विश्व हिंदी सम्मेलनों का बृहत् अनुभव प्राप्त लोगों तथा 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजनकर्ताओं को मंच पर सादर आमंत्रित करके उनके विशिष्ट साक्षात्कार लिए जाएँगे।

यह आशा की जाती है कि चर्चित प्रयासों से 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के प्रति लोगों की रुचि बढ़ती जाएगी और सम्मेलन में प्रतिभागिता की दर अपेक्षाओं को पार कर दे। अंततः 11वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन एक नये इतिहास की रचना करे और हिंदी अपनी गुणवत्ता, व्यापकता और वैज्ञानिकता के साथ-साथ विशिष्ट अंतरराष्ट्रीय सहयोग के बल पर संयुक्त राष्ट्र संघ की मान्य भाषा बने तथा प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का महती संकल्प मूर्त हो जाए।

डॉ. माधुरी रामधारी
उपमहासचिव

विश्व हिंदी दिवस 2019

के उपलक्ष्य में आयोजित
'अंतरराष्ट्रीय यात्रावृत्तांत प्रतियोगिता'

प्रतियोगिता को 5 भौगोलिक क्षेत्रों में बाँटा गया है :

1. अफ़्रीका व मध्य पूर्व
2. अमेरिका
3. एशिया व ऑस्ट्रेलिया (भारत के अतिरिक्त)
4. यूरोप
5. भारत

प्रत्येक क्षेत्र के विजेताओं को **प्रमाण-पत्र** व निम्नलिखित **नकद पुरस्कार** प्रदान किए जाएँगे :

प्रथम पुरस्कार : 300 अमेरिकी डॉलर

द्वितीय पुरस्कार : 200 अमेरिकी डॉलर

तृतीय पुरस्कार : 100 अमेरिकी डॉलर

परिणामों की घोषणा विश्व हिंदी दिवस 2019 के अवसर पर की जाएगी।

नियम व शर्तें

- प्रत्येक प्रतिभागी से केवल **एक** ही प्रविष्टि स्वीकार की जाएगी।
- यात्रावृत्तांत लगभग 2500 शब्द संख्या का होना चाहिए।
- यात्रावृत्तांत देवनागरी लिपि में स्पष्ट, हस्तलिखित अथवा टंकित होना चाहिए।
- यात्रावृत्तांत अप्रकाशित (प्रिंट अथवा इलेक्ट्रॉनिक) एवं मौलिक रचना तथा कॉपीराइट से स्वतंत्र होना चाहिए।
- प्रविष्टि पर प्रतिभागी का नाम, हस्ताक्षर और अन्य विवरण न हों। प्रतिभागी का नाम, पता, फ़ोन नंबर तथा इ-मेल एक अलग पृष्ठ पर लिखकर संलग्न करना अनिवार्य है।
- लिफ़ाफ़े के ऊपरी बाएँ कोने पर अथवा इ-मेल के विषय के रूप में **'अंतरराष्ट्रीय यात्रावृत्तांत प्रतियोगिता'** लिखा होना चाहिए।
- निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम होगा।
- विश्व हिंदी सचिवालय यात्रावृत्तांत को प्रकाशित करने का अधिकार रहेगा।

प्रविष्टि डाक अथवा इ-मेल द्वारा ***30 नवम्बर, 2018*** तक सचिवालय को प्राप्त हो जानी चाहिए।

पता : World Hindi Secretariat, Independance Street, Phoenix 73423, Mauritius
फ़ोन : +230 6600800
इ-मेल : yatracomp2018@gmail.com

विश्व हिंदी सचिवालय, मुख्यालय
फ़ेनिक्स, मॉरीशस

सचिवालय का मुख्य द्वार

सचिवालय के शिलान्यास एवं उद्घाटन की नामपट्टिकाएँ

सचिवालय में प्रवेश का मुख्य मार्ग

ग्रंथालय एवं प्रलेखन केंद्र

प्रेक्षागृह

सचिवालय की वामकोणीय झलक

अतिथि गृह

कार्यकारिणी कक्ष

सम्मेलन कक्ष